गोवंश,

उसके रक्षक

तथा

सेवकों

को

मे हाथ डालकर गोवर निकाल लेना चाहिये। चावलों
मॉड़ नमक डालकर या अरारोट को पानी मे पकाकर गु
द्वारा पिचकारी कर सकते हैं। यह पिचकारी २ फुट लम्
वॉस की नली मे एक तरफ टीन का 'फनल' लगाकर बन
जा सकती है। इसमें तेल लगाकर गुदा मे डालना चाहि
और जरा उसको ऊपर उठाकर धीरे-धीरे आगे-पीछे करते
मॉड़ वगैरा छोड़ो। ज्यों-ज्यों रोग घटता जाय, खूराक बढ़
जानी चाहिए।

बीमारी से पशुओं के वचाने के लिए ४ वातों की आ
श्यकता होगी। उन पर विशेष ध्यान रक्खा जाय। हम ए
एक कर उन्हें नीचे दे रहे हैं—

१—हवा। हवा ही जीवन है। इसमें १/५ हिस्से प्राणव
(Oxygen) जो खून को साफ करता है, होता है और ४
भाग में नेत्रजन (Nitrogen) अमोनिया, कारवोनिक एसि
गैस तथा पानी की भाप वगैरह है।

२—पानी। इससे भोजन पचता है। यह पानी दो प्रक
का (१) हल्का और (२) भारी होता है। हल
पानी वह कहा जाता है, जो विला स्वाद, नमक व चूना वगै
से वरी हो, कुओं व वर्षा से प्राप्त होता है। यही उत्तम
यही पानी जव तालावों मे भर जाता है, तो गॉव-भर
गंदगी से व वीमार जानवरों को नहलाने-धुलाने से दूषि
हो जाता है। अत. वह पानी न पिलाना चाहिये।

३—भोजन। स्वास्थ्य के लिए यह हवा और पानी के बाद हुत जरूरी है। इसमे हर प्रकार के दाने व चारे शामिल हैं। ोजन उत्तम तथा शीघ्र पचनेवाला देना चाहिए। काम के ानुसार पशु की खूराक का प्रबन्ध होना चाहिए। यदि ानवरों की अच्छी खिलाई व देख-रेख रहे, तो १०—१२ साल क काम लिया जा सकता है। अतः काम करनेवाले बैलों, ध देनेवाली व गाभिन गायों को चने, जौ, धान, चोकर, ली, बिनौला, मौथ, उड़द, कुलथी, जुआर, बाजरा, नमक, ंधक, हड्डी का चूरा, भूसे-चारे में मिलाकर दो। निर्बल पशुओं ो अल्सी, गुड़ तथा यव पका-पकाकर खिलाना चाहिए। दो टॉक अलसी का तेल चने की रोटी मे मिलाकर खिलाने से रम लाभ होता है।

४—परिश्रम। जानवरों से प्रतिदिन परिश्रम लेना आव- यक है। गाभिन गायों को चरने को जरूर भेजो और काम- ाले बैलों को काम लेने से दो घंटे पूर्व खिला दिया करो। ाचों को छोड़ देना चाहिये, ताकि वह उछल-कूद सकें। इन ब बातों का ध्यान रखने पर भी छूत के रोग हो ही जाया रते हैं। इनसे बचाव के लिए निम्नांकित ११ बातों का ध्यान खना चाहिए:—

१—रोगी पशु को स्वस्थ जानवर से अलग रक्खो।

२—जिस गाँव मे रोग हो, वहाँ से पशुओं की आमद-

३—सफर मे पड़ाव से अपने जानवर अलग बाँधो।

४—ख़रीदे जानवरों को भी १५ दिन तक अपने पशुओं से अलग रक्खो।

५—पानी कुओं से खींचकर बाल्टी में पिलाओ, चरहियों मे नहीं।

६—रोगी पशुओं की देख-भाल करनेवाले आदमी स्वस्थ पशुओं को न छुएँ।

७—रोगी पशुओं का चारा, गोबर वग़ैरह जलाया या गाड़ा जाया करे।

८—छूतवाली बीमारियों के आरम्भ होते ही टीके लगवाना चाहिए।

९—जहाँ रोगी पशु बाँधे जायँ, वहाँ आग जलाओ। १ फुट मिट्टी खोदकर फेंक दो और चूना क़लई तथा ताज़ी मिट्टी डाल दो। गंधक जलाओ और १०/१२ घंटे दरवाज़े बन्द रक्खो। कुछ दिनों तक वह स्थान ख़ाली रहे, बाद को अच्छे जानवर बाँधे जायँ।

१०—रोग से मरे जानवरों को गड्ढों मे ६ फुट गहरा गाड़ना चाहिए।

११—तन्दुरुस्त जानवर साफ़ रहें, जिससे मच्छड़, मक्खी, किल्ली, जुओं, पिस्सू, डाँस आदि द्वारा छूत की बीमारियों के फैलाने से बचे रहें।

मुँह-खुरपका

इसको अँगरेजी मे 'फूट ऐड माउथ डिसीज' (Foot and mouth disease) कहते हैं । 'एपीजोटिक एप्था (Epizootic aphtha) 'एप्थास फीवर (Aphthous fever) एग्जमा कॉन्टेजिओसा (Eczema contagiosa) कहते हैं । मगर हिंदी मे व हिंदुस्तान मे इसको अलग-अलग जबानों मे अलग - अलग नामों से पुकारते हैं । यह रोग समस्त भारत मे होता है । इससे सभी जगह के लोग इसे जानते हैं। इसको साधारणतः खुरा रोग, मुँह खुर, खुरी, खुर पक्का, मुँह की बीमारी, मुँह-पाँव की बीमारी, रोरा, खुरफूटा और खाँग के नामों से पुकारते हैं।

इसमे संदेह नहीं कि बीमारी बडी बुरी और लगनी है, मगर यहाँ उतनी हानि नहीं करती, जितनी कि योरप और अमेरिका आदि देशों में। योरप, अमेरिका मे तो इस रोग से ८०% से ६०% तक पशुओं की मृत्यु होती है । योरप में लोगों ने इसे सन् १८४० ई० से ही जाना है । तब से इस रोग से बडी हानि हुई है। सन् १७०७ ई० व सन् १७६३ ई० मे तो योरप को इस रोग से बड़ी क्षति पहुँची है। मगर भारत मे तो इससे केवल २% से ४% तक ही मौतें होती पाई गई हैं। वह भी बड़े पशुओं की नहीं, छोटे-छोटे बछड़ों आदि की, जो कि न खाने-पीने के कारण रोग से निर्बल न होकर मर जाते हैं। यह बीमारी केवल तीन-चार दिनो मे ही

जिन-जिन जानवरों को होनी होती है, हो जाया करती है, और बीच मे मरनेवाले जानवर मर भी जाया करते हैं। यह बीमारी गाय, भैंस, भेंड़, बकरी, सुअर, मुर्गी, ऊँट, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, लामा, अमेरिकन बिसन, हिरन व जिराफी को भी हो जाया करती है।

रोग का निदान (पहचान)

बदन थरथराने लगता है। बुखार आ जाता है। बुखार की गर्मी १०६% तक हो जाती है। मुँह, सींग व खुर गर्म हो जाते हैं। मुँह से लार गिरने लगती है। मुँह, जबान, स्तन, पाँव और नाक पर आबला पड़ जाते हैं, जोकि लोबिया के बीज के बराबर बड़े होते हैं। वे १८-२४ घंटे के बीच में फूट जाते और बाद को उसी स्थान पर लाल-लाल दाग़ हो जाते हैं। यह दाग या तो जल्द अच्छे हो जाते हैं, या घाव हो जाया करते हैं। जानवरों को चलने-फिरने में बड़ा कष्ट होता है। चारा-दाना तो जानवर बिल्कुल खा ही नहीं पाते। बड़े निर्बल हो जाते हैं। ठीक-ठीक देख-भाल न हो पाने से घावों मे कीड़े पड़ जाते हैं।

चिकित्सा (दवा)

जैसे ही अपने जानवरों मे इस रोग के होने की ज़रा भी शंका हो, अच्छे और बीमार जानवरों को तुरंत अलग-अलग करदो और फिर एक दूसरे से न मिलने दो। खाने को

दलिया या लपसी दो आटे की काँजी, अल्सी व चावलों
लप्सी, बाजरे का दलिया व चोकर में नमक मिलाकर प
मे पकाकर देना बड़ा लाभ करता है। रहने के घरों को स
कराकर कलई से पुतवा डालो। नीचे की दवाओं में से कि
भी दवा को पेट साफ करने के लिए दो—

(१) अमचुर सूखी ƒ=
पीली कटेली का फूल ƒ–
इन दोनो का काढ़ा करके पिला दो।

(२) पुराना गुड़ ƒ१
सौंफ ƒ।
दोनो को ƒ१ पानी में औटाकर पिलाओ।

(३) एप्सम साल्ट ƒ।। गर्म पानी में डालकर पिला दो

अगर जानवर को दस्त लगते हों, तो नीचे की दवा
में से किसी एक दवा को दो·—

(१) सुहागा फूला ४ माशे
वर्ग वहजगे २ माशे
गोल मिर्च सफेद ५ ,,
सौंठ ६ ,,
सिर्का ४ तोले
पानी ƒ।।
सबको मिलाकर पिलाओ। लाभप्रद है।

(२) सूखा मदार का फूल ४ माशे

नौसादर ३ माशे
खड़िया ४ ,,
गेरू २ ,,
नमक साँभर ७ तोले

सब दवायें पीसकर पानी मे घोलकर पिलायें।

(३) अजवाइन खुरासानी १ तोला
बीज धतूरा ४ माशा
सोडा ३ ,,

सब मिलाकर थोड़ा-सा नमक डाल अर्क़ पोदीना १० तोले के साथ पिलायें।

अगर दस्त न लगते हों, तो इन दवाओं मे से दो—

(१) सौंफ १० तोले
दूध भेड़ का २७ ,,
रोगन जर्द ५ ,,

सबको मिलाकर पिला दो।

अगर बुख़ार ज्यादा हो, तो नीचे लिखी हुई किसी दवा को खिलाने से उतर जायगा—

(१) कपूर ६ माशे
शोरा १ तोला
शराब ऽ-

कपूर को शराब में घोलकर शोरा मिलादो और फिर ऽ१। ठंडे पानी में मिलाकर पिलादो।

(२) लाहौरी नमक २॥ तोले
शोरा १। ,,
चूर्ण चिरायता २॥ ,,
शीरा ऽ=

सबको ऽ१। सेर पानी में मिलाकर पिलादो।

अगर जानवर की दशा कमजोर व उदास मालूम पड़े, तो इन नीचे की दवाओं को प्रयोग मे ला सकते हैं।

(१) कपूर ६ माशे
नौसादर १ तोला
शराब ऽ-

पहले कपूर पीसकर शराब मे मिलाओं फिर नौसादर पीस ऽ। ठंढे पानी मे मिला लो, बाद को सबको इकट्ठाकर पिला दो।

(२) शराब देशी ऽ=
सोंठ ऽ०॥ (टका भर)
चूर्ण काली मिर्च ऽ०। (पैसा भर)

सबको अच्छी तरह ऽ१। सेर पानी में मिलाकर पिला दो।

(३) नौसादर ऽ०। (एक पैसा भर)
सोंठ १ तोला

दोनो को ऽ१। सेर ठंढे पानी मे मिलाकर पिला दो।

(४) हीरा कसीस १ तोला
नमक ऽ०॥

इन्हें पीस पुड़िया बना लो। एक पुड़िया रोजाना दो। भेंड़, बकरी को इसका १/६ हिस्सा दो।

(५) सौंफ १ तोला
चिरायता ȷ०॥ (टका भर)
अजवाइन १ तोला
इलायची १ ,,

सबको पीसकर मिला लो और खाने के साथ दिया करो।

अब नीचे जानवरों की कुल्ली के वास्ते दवाएँ लिखते हैं। नीचे की किसी भी दवा को इस्तेमाल कर सकते हैं:—

(१) सुहागा ३ माशे
फिटकरी ३ ,,
सिर्का २॥ तोला

सबको ȷ१ पानी मे मिला दिन मे दो बार कुल्ली कराओ।

(२) फिटकरी १ तोला
गर्म पानी ȷ॥

दोनों को मिलाकर पशु को कुल्ली कराओ।

(३) आँवले को पानी मे भिगोकर उसी से कुल्ली कराओ और खुर धोओ।

(४) कीकर (बबूल) की छाल के उबले पानी से कुल्ली कराओ और खुर धोओ।

(५) सुहागा या फिटकरी के पानी से कुल्ली कराओ और खुर धोओ।

(६) तूतिया ४ तोला
गर्म पानी ऽ॥
मे घोलकर मुँह व खुरों को धुलाओ।

(७) गर्मपानी में फिटकरी घोलकर मुँह, थन व खुर धुलाओ।

(८) नीम के पत्ते ऽ५
पानी ॥ऽ
मे उबाल कर जख्म मुँह, खुर व स्तनों को धोओ।

(६) "पोटाश" के पानी से खुर, थन धोओ।

अब नीचे घाव के लिए मलहम लिखते हैं। किसी भी मलहम से लाभ उठा सकते हैं।

(१) सीप का चूर्ण अलसी के तेल मे घोंटकर घाव पर लगाये। घाव जल्दी भरेगा। अगर घाव मे पीव पड़ता हो तो नारियल का तेल चुपड़ते रहे।

(२) कपूर १ माशा, तेल तारपीन ६ माशा, भुना तूतिया १ जौ तेल मीठा ४ तोले सबको मिलाकर खूब घोंटकर मलहम बनाकर रख लो और घावों पर लगाओ।

(३) मुरदाशंख, तूतिया, राल सब पैसा पैसा भर नीम की कोंपलें ३ तोले सबको पीसो और ऽ= गोघृत मे सब दवायें मिलाकर आग पर पकाओ। जब दवायें खाक हो जाएँ तब उतार कर पत्थर पर रगड लो। दवा कपडे पर चुपड़ कर घाव पर रक्खो। अगर किसी जख्म या जख्मों मे कीड़े पड़ गए हों, तो

इन दवाओं मे से किसी का प्रयोग करें। अवश्य लाभ होगा।

(१) तेल सरसो ५ तो०, तेल तारपीन ५ तो० दोनों मिलाकर लगाओ।

(२) बोंवई और तम्बाखू के पत्तों को बाँटकर घावों पर बाँध दो।

(३) तूतिया ४ तो० गर्म पानी ४० तो० में घोलकर घावों पर डालो।

(४) तारकोल या तेल नीम ज़ख्मों पर लगाओ।

(५) तारकोल ऽ– चर्वी ऽ॥ तेल मीठा ऽ= सबको मिला कर मलहम बना लो। घावों को पहिले गर्मपानी से धोकर ऊपर से इसे लगा दो।

(६) खड़िया ऽ= कोयला लकड़ी ऽ०॥ फिटकरी ऽ०॥ तूतिया ऽ०। सबका चूर्ण कर घावों भुरको।

(७) नीलाथोथा ६ मा० तम्बाखू के पत्ते १ तो० खूब बारीक पीस कर घाव मे भर दो। ऊपर से मिट्टी की टिकिया रखकर खूब बाँध दो।

(८) भिलावा ४ तो०, प्याज़ २० तो० घुँघुची लाल ५ तो०, आ.डूबाम २ तो०, पोस्तबीख, दरख्त आ.डू, तेल चुनार २० तोले। तेल को आग पर रक्खे और उसमे एक एक चीज़ सोख्ता कर-कर के फेंकते जायें। बाद उतारने के तेल में मोम ३ तो०, तूतिया ६ मा०, माईखर्द २ तो० पीसकर डाले और ठंडा हो जाने पर काम में लायें।

निमोनिया

इस रोग को अँगरेजी में निमोनिया (Pneumonia); पंजाबी तथा सिंधी मे फीपड़ी, बम्बई मे पप्सा और जातुलजंब कहते हैं।

यह रोग फेफड़ों और सीने की झिल्ली मे होता है। रोग छूत का है, और यह गाय, भैंस, भेड़ और बकरियो को होता है। रोग सब जगह, सब आबोहवा व सब जाति के जानवरों को सभी उम्र मे हो सकता है। रोग के होने का पता नहीं लगता। कभी-कभी तो धीरे-धीरे और कभी-कभी शुरू होते ही एकदम आखिरी दर्जे को पहुँच जाता है। इस रोग मे एक माह से चार माह या इससे भी ज्यादा लग जाते हैं। इस रोग के होने का यह नियम नहीं कि गल्ले के हर एक पशु को यह हो ही जाय अपितु यह एक ही गल्ले मे एक जानवर को होता है और दूसरे को नहीं। यह रोग कीडों से पैदा होता है। अक्सर पशु को जाड़ा लगने से ही इसकी शुरुआत होती है। बहुधा जानवरों को एकदम गर्मी से ठढक मे पहुँचाना या ठीक वायु का उनको प्राप्त न हो सकना भी इस रोग को पैदा कर देता है।

रोग की पहिचान

सबसे पहले तो शरीर की गर्मी बढ़ जायगी। नाड़ी तेज होगी, मुँह गर्म तथा थुथड़ी सूखी होगी, खाँसी (जो कि सूखी किस्म की होगी) आयेगी। भूख व दूध कम हो जायगा। एक दो दिन मे बुखार के निशानात मालूम होंगे। बाल खड़े हो

जाते हैं। साँस मे वदबू आती है। खाँसी बढ़ जाती है। नथुने फैल जाते हैं और पशु जल्दी-जल्दी साँस लेता है। अगर उसकी छाती पर कान लगाये, तो दाँत पीसने जैसी आवाज सुनाई पड़ेगी। अगर सीने के एक तरफ रोग होगा, तो जानवर उसी तरफ झुककर वैठेगा। आँख, नाक से थोड़ा-थोड़ा मवाद निकलता है। टाँगें, सींग और खाल ठढी हो जाती है। खाल सूख जाती है। पीठ पसलियों से चिपक जाती है। पसलियों के वीच अँगुली से दवायें, तो दर्द होता है। आखिरी हालत मे दस्त आने लगते हैं।

वुखार कम हो जाने पर पशु फिर पूरी खुराक खाने लगता है। मगर ज्यों-ज्यों वीमारी का समय व्यतीत होता जाता है, त्यों-त्यों फेफड़े ठोस तथा वंद होते जाते हैं, साँस लेना कठिन हो जाता है, जिससे खून साफ न हो सकने से पशु निर्वल होता जाता है और अन्त मे दम घुटकर मर जाता है।

अगर वीमारी जल्दी वढ़नेवाली हुई तो जानवर एक हफ्ते से लेकर दस दिन तक मे मर जाता है और अगर रोग ज्यादा दिन ठहरनेवाला या हल्का हुआ तो पशु २, ३ या ६ माह वाद मरेगा।

चिकित्सा

सबसे पहिले वीमार पशुओं को स्वस्थ जानवरों से अलग कर दो। सफाई आदि का विशेष ध्यान रहे। वाँधने की जगह हवादार हो। खाने को हरी घास, चावलों का माँड़ और

मुलायम खुराक दो। पानी साफ और शुद्ध हो। यदि टीका लगवा दिया जाय तो परम उत्तम है। अगर कब्ज हो तो—

शीरा ʃ—॥ (डेढ़ छटाँक)

नमक ʃ— (एक छटाँक)

दोनों को अलसी के माँड़ में मिलाकर पिलाओ। सुवह-शाम दो। अगर बुखार हो और नाड़ी तेज हो तो यह दवा दो—

कपूर ।=) भर, यानी ५ माशे

शोरा १) ,, (एक तोला)

शराब ५) ,, यानी ५ तोला

कपूर को शराब मे घोलकर शोरा मिला दो और फिर ʃ१। सवा सेर पानी मे सबको मिलाकर पिलादो।

जब बुखार जाता रहे तो ताक़त की दवाये देना चाहिए—

(१) हीरा कसीस १) भर यानी १ तोला

नमक २॥) ,, यानी २॥ तोला

दोनों को पीसकर पुड़िया बना लो और रोजाना एक पुड़िया दिया करो, लाभप्रद है। भेड़, बकरी को एक दिन में छठवाँ भाग देना चाहिए।

(२) सौंफ १) भर

चिरायता २॥) ,,

इलायची १) ,,

अजवाइन १) ,,

इनको कूटकर मिला लो, और रोज खाने के साथ दिया

करो। जैसे ही रोग शुरू हो, यह दवा पिलानी चाहिये।

ह्विस्की	४ तोला
स्वीट स्प्रिट ऑफ नाइटर	२ ,,

दोनों मिलाकर १-१ घटे पर जब तक ठंढक न जाती रहे, पिलायें। जब सर्दी जाती रहे और बुखार रहे तो ये दवायें दें।

टिंक्चर एकोनाइट (Tin Aconite) १५ ड्राम फ्लूड एक्सट्रैक्ट बेलाडोना (Fluid Ext. Bella.) ३० ड्राम

हरएक ४ घटे पर अदल-बदलकर ऊपर लिखी एक-एक दवा दो, जब तक कि बुखार न मिटे।

खाँसी

इसे अँगरेजी मे 'कफ' (Cough) और हिंदी में खाँसी, कास, धाँस, खेस और सरेदमी कहते हैं।

इस रोग मे हवा की बडी नली और उसकी शाखायें, जो कि फेफड़ों में गई हैं, सूज जाती हैं। वे लाल हो जाती हैं। यहरोग उस दशा मे होता है, जब कि गले मे सूजन हुई हो और दवा न की गई हो या देर से हुई हो। पशुओं को यह रोग सर्दी आदि लगने से होता है। अधिक धूल मुँह में जाने से, फेफड़ों में कुछ फालतू मादे के इकट्ठे होने से, सड़े-गले चारे से, बुरी बदबूदार हवा में श्वास लेने तथा कीड़ों से यह रोग बहुधा होता है। जब गर्मी से खाँसी आती है, तो कफ नहीं निकलता और यह सूखी कहलाती है और जब सर्दी से आती है तो कफ निकला करता है। सूखी खाँसी मे पशु धाँसा करता है

पशु साँस जल्दी-जल्दी लेता है और उसमे एक प्रकार की साँय-साँय की सी आवाज होती है, जो कि उसके सीने पर कान लगाने से भली प्रकार सुनाई पड़ती है। पशु के खाँसने के बाद बलगम उसके नथनो पर लग जाता है। इससे भी बीमारी एक दूसरे को लग जाती है। यह भी छूत ही की बीमारी समझनी चाहिए। जहाँ गल्ले मे एक को हुई नही कि सब गल्ले भर में हो जाती है।

रोग की पहिचान

पशु सुस्त सा रहता है । आँखें डबडबाई-सी रहती हैं। कभी-कभी जीभ निकाल दिया करता है। साँस लेने मे बड़ा कष्ट तथा बेचैनी-सी हो जाती है। साँस जल्दी-जल्दी और "घुर-घुर" शब्द के साथ चलती है। जब यह पुरानी हो जाती है और दवा वगैरा नहीं होती, तो इसी से पशु निर्बल होकर एक महीने के अन्दर ही मर जाया करते हैं। इसी के बिगड़ने से दमा हो जाया करता है, जो कि बड़ा ही भयंकर रोग होता है और पशु को बड़ा कष्ट देता है। कभी-कभी तो फेफड़ों तक पर इसका बुरा प्रभाव पड़ जाता है।

चिकित्सा

जानवर का सर्दी-गर्मी से सदैव बचाव करते रहना और स्वच्छ हवा मे रखना व साफ खाना-पानी देना चाहिए। रात को जाड़ा हो, तो कंबल उढ़ा देना चाहिए। खाने को

मुलायम खाना और चावलों वगैरह का माँड़ देना चाहिए, बाद में इनमें से कोई दवायें दो—

(१) नौसादर, सोंठ, अजवाइन तोला-तोला भर गर्म पानी में पिलाओ।

(२) अनार के सूखे छिलके पीसकर ऽ— मक्खन में मिलाकर पिलाओ।

(३) नमक की डली ऽ— आक के पत्तों में लपेट भुलभुल में रात को गाड दो। प्रात निकालकर, नमक पानी में घोलकर ४ दिन पिलाओ।

(४) केले के सूखे पत्तों की राख २ तो०, मक्खन ४ तो० कच्चा दूध १० तोले सबको मिलाकर रोज रोज ३ दिन पिलाओ।

(५) तेल अलसी ऽ।। तैल तारपीन १ तोला दोनों मिलाकर पिलाओ।

(६) तेल सरसों का ऽ— रोज रोज कुछ दिन पिलाने से लाभ होगा।

(७) सौंफ ऽ=, मिश्री ऽ=, कालीमिर्च ७ तो०, आँवला १ तो०, करंजगिरी १ तो०, सबका चूर्णकर २ तो० गौ के मक्खन में दोनों समय आटे में दें।

(८) गोंद बबूल, गोंद कतीरा, तोला-तोला लेकर पीसकर जौ के आटे में पिंड बनाकर खिलाओ।

(९) उत्तम शराब १०-१० तोले १ मास तक पिलाओ।

(१०) प्याज ऽ।, नमक २ तोले दोनों को पीसकर २१ दिन खिलाओ।

(११) अडूसा की पत्ती ऽ-, नमक साँभर १ तोला दोनों को पीसकर जौ के आटे मे पिंड बनाकर खिलाओ।

(१२) सोंठ, कायफल, मेथी, हींग, वायविडंग, शुद्ध फिटकरी, कुटकी, चौकिया सुहागा शुद्ध, कालीमिर्च सब चीजे २-२ तोले ले चूर्ण कर जौ के ऽ॥ आटे में मिला दो। एक-एक छटाँक का पिंड बना प्रातः १ पिंड देने से खाँसी, धाँस एवम् सर्दी के सब रोग मिटेंगे। परीक्षित है।

राजयक्ष्मा

इसे क्षयी, सूखा और तपेदिक़ आदि नामों से पुकारते हैं। अँगरेजी मे इसे "ट्यूबरकुलोसिस" (Tuber culosis) "थाईसिस" (Pthisis) "कंजम्पशन" (Consumption) कहते हैं।

यह बड़ा भयंकर छूत का रोग है। इस रोगवाले पशुओं का दूध खाने से मनुष्यों को भी यह रोग हो जाता है। योरप आदि देशों मे तो ३०% पशु-समुदाय इस मर्ज मे मुब्तिला है। मगर यहाँ पर केवल ३% या ४% पशु ही रोग ग्रसित हैं। यहाँ पर गाय, भैंस, खच्चर, घोड़े और हाथियों को भी यह रोग होता देखा गया है।

रोग बहुधा पशु से पशु को ही होता है। इस रोग के कीटाणु से, जो कि शरीर मे ही रह सकते हैं और बड़े मुलायम

होते हैं, बीमार के कफ से, पाखाने तथा जूठा चारा वगैरह खाने से दूसरों को हो जाता है। मनुष्य की बीमारी के कीड़े पशुओं पर असर नहीं करते, मगर पशुओं के कीड़े मनुष्यों पर आसानी से असर कर जाते हैं। सूरज की किरणों से शीघ्र ही ये कीडे मर जाते हैं। अगर गोबर आदि के नीचे ये दबे पड़े रहे और धूप न लगे, तो महीनों तक जिंदा बने रहते हैं।

पशुओं को पौष्टिक खाना न मिलना, बहुत ही कम खाना मिलना, अँधेरे और गैर हवादार स्थानों में बाँधना, उनको ठीक सफाई और धूप न पहुँचना बीमारी को पैदा करने मे मुख्य सहायता करनेवाले कारण हैं।

बग़ैर पते के पशुओं का दूध पीना ही पड़े, तो उचित है कि उसे पीने के कब्ल १४५° तक आध घंटे गर्म करे और फिर ६०° पर ठंडा करें। ऐसा करने से फिर क्षय हो जाने का डर नहीं रहता। आजकल जो 'पेस्चुराईज़ेशन' का प्रयोग डेरियों में हो रहा है, उसका मुख्य कारण, दूध के हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करना ही है। इसलिए जहाँ तक दूध आदि के मामलों मे स्वच्छता की आवश्यकता है, डेरियों में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

रोग की पहचान

ऊपर से देखने में रोग के कोई भी चिह्न नहीं प्रतीत होते। मगर चतुर पशु-विशेषज्ञ अवश्य पशु को देखकर कुछ-न-कुछ

मालूम कर लेते हैं। डेरियों मे तो पशुओं की प्रति वर्ष परीक्षा की जाया करती है कि उन्हे क्षय तो नहीं हो गई है।

इसका रोगी दुर्बल, खॉसीग्रसित होता है। जैसे ही शक हो तुरंत ही (apply the tuberculin test) रोग की परीक्षा करानी चाहिए। इस रोग मे सीने पर फेफड़ों में असर हुआ करता है। रोग बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है। सालों बना रहता है। बार बार पशु को निमोनिया होता है और अच्छा हो जाता है। दस्त बहुधा आते रहते हैं। जब रोग की हालत बढ़ जाती है, तो पशु के शरीर के बाल फटे-से रहते हैं और वह सुस्त सा हो जाता है। जब फेफडे और गले मे बीमारी का असर हो जाता है, तो पशु सॉस जल्दी जल्दी लेता है। सॉस कठिनता से ले पाता है। ऐसा भी देखने में आएगा कि पशु की दशा देखने मे बहुत अच्छी हो, मगर वह भी रोग से ग्रसित हो।

मरने के बाद यदि उसे चीड़कर देखे, तो फेफडे, तिल्ली, गुरदा आदि पर फुंसियॉ मिलेंगी। असाध्यावस्था मे वे फुनसियो बाजरा के बराबर बड़ी हो जाती हैं।

चिकित्सा

सफाई और खुली हवा मे रक्खो। पशु को खूब आराम और खाने को अच्छा दो, ताकि उसकी अवस्था सॅभल जाय। यहॉ के बीमार पशुओं का कोई खास इलाज नहीं। मगर यह दवायें दे सकते हैं:—

(१) बुखार के लिये काफूर व शोरा व शराबवाला नुसखा दो।

ये दाने अक्सर गर्मी मे होनेवाले रोग में निकल आते हैं। जिन जानवरों के ये दाने निकल आते हैं, वह बहुधा मरते नहीं।

यह बीमारी २४ घंटे से लेकर १२ या १६ दिन तक रहती है। मगर अक्सर ३ दिन से ६ दिन तक ज्यादा जोर रहता है।

रोगी पशु की चीर कर परीक्षा (Post Mortom Exam.) करने से जबान, मुँह, चौथे मेदे (Fourth Stomach) बड़ी और छोटी आँतों तथा खासकर गुदा स्थान पर फुंसियाँ देखने में आएँगी।

चिकित्सा

इस रोग मे बहुधा दवा से बहुत कम लाभ होता है। मगर इस रोग के वास्ते 'इम्पीरियल रिसर्च इन्स्टीट्यूट मुक्तेश्वर' (Imperial Institute of Veterinary Research Muktesar) वालों ने एक टीका निकाला है, जिसके लगवाने से फिर पशुओं को यह रोग नहीं होता। इस रोग के पशुओं की खूब देखरेख, खाने तथा पीने का पूरा प्रबंध रहना मुनासिब है। जब तक कब्ज दूर न हो दिन मे दो-तीन बार ४ तोले से लगाकर ८ तोले तक 'एप्सम साल्ट' पिलाना चाहिए, ताकि दस्त आकर पेट साफ हो जाए। जानवर को काफी कपड़ा वगैरह उढ़ाकर गर्म रक्खो।

१—चेचक निकलने के कब्ल सेमल के बीज इस्तेमाल करना शुरू करा दो। निकलने पर यह दवा न देना। सेमल के बीजों को गुड़ में तीन दिन तक सेवन कराओ। पहले दिन

एक बार मे २५ बीज, दूसरी बार १८ बीज, तीसरी बार ३-४ घंटे के अंतर से दोनों दफे मे १० बीज। दूसरे दिन पहली बार १५, दूसरी बार दोनों दफा १० बीज १२ घंटे के अंतर पर। तीसरे दिन एक बार १० बीज चेचक के पकने के पहले खिलाना चाहिए।

२—कुम्भीर का अंडा चेचक की अन्यतम औषधि है। ५-७ रत्ती अंडा, ७ से २८ कालीमिर्चों के साथ प्रयोग से लाभ होता है। चेचक निकलने के लक्षण प्रकट होने से प्रथम प्रति दिन ३ बार, आरोग्योन्मुख अवस्था मे प्रतिदिन दो बार ७-८ दिन उपर्युक्त औषधि खिलाइए।

३—बीमार पशु को हलंच का शाक खिलाना परम उपयोगी है। खाने के लिये मुलायम खाना जेसे चावलों का दलिया वगैरह देना चाहिये। दस्त लगने की हालत मे पीने के लिए गुनगुना पानी ही दिया जाना लाभप्रद है। सख्त, सूखा और रेशेदार चारा कभी मत दो। अगर दस्तों में खून को आते जब २४ घंटे हो जायँ, तब यह नुस्खा काम में लायें। थैकर साहब ने इसे बड़ा मुफीद पाया है—

(१) कपूर ३/४ तोला
शोरा ३/४ ,,
बीज धतूरा १/४ कांचा
चिरायता ३/४ तोला
शराब १० ,,

सबको मिलाकर पिलाओ।

(२) वर्गहिना २ तोला
गुलनीम ३ ,,
चिरायता १ ,,

सबको पानी मे पकाकर, थोड़ा नमक मिलाकर पिलाओ। परीक्षित है।

(३) तुख्म धतूरा ३ माशा
दारुल्हल्दी १ तोला
चोबचीनी १ ,,
सोंठ ६ मा०
फेनचितहर २ ,,
उन्नाब २ तोला

सबको ऽ१ पानी में पकायें, जब आधा रहे, तो ठंडाकर उसमें शोरा कलमी २ तोले पीसकर मिलाकर पिलायें, परीक्षित है।

(४) वर्ग बबूल ८ तोला
कत्था ३ ,,
चूना ६ माशा

सबको चूर्णकर देशी शराब १२ तोले में, आधा सेर ताजे कुयें के पानी में सबको मिलाकर पिलाइये। अवश्य लाभ होगा, परीक्षित है।

गलघोंटू

इस रोग को अंग्रेजी मे बफेलो डिसीज़ (Buffalo

disease) मेलिगनेंट सोरथ्रोट (Malignant Sore-throat) 'बारबोन' (Barbone) 'हेमोरेजिक सेप्टीसीमियाँ' (Haemorrhagic Septicaemia) कहते हैं। हिंदी में खासकर अपने प्रांत में तो गलघोंटू, गलाफूला, गलसुआ, घुड़का, सूजा, हुनका, गठरवान, घटरोहन, बेल्लई, घोड़वा, हैलवा, बासी, गुरारा, बाघा, गलफुलवा, लढ़वा, बिल्लारू, घोड़का, बोमड़ा, जलबलिया उमरी, घेंघी, घुलाकी, भगौती, मॉड़ आदि नामो से प्रसिद्ध है। बंगाली मे गलाफूला, पंजाब व बलोचिस्तान में गलघोंटू और बंबई मे अवरी कहते हैं।

यह रोग भी एक प्रकार के छूत के रोग मे से है। बीमारी और छूत के रोगों की तरह लगनी है। अतः इसका भी पूरा-पूरा बचाव रखना चाहिये कि बीमार पशु औरों से न मिलने पाये। सफाई पर पूरी तौर से गौर करना लाजिमी है।

यह रोग खासकर क्वार के महीनों मे होता है। गला सूज जाता है, सॉस रुक जाती है, और पशु अगर काफी देख भाल व दवा वगैरः न हुई तो २४ घंटों में मर जाता है।

इसके होने के कारण केवल ये हैं—

(१) मैले कुचैले गड़हे मे बैठना (जिनमें कि गर्म पानी होता है) और फिर उसी का पानी पीना।

(२) गढ़ों के सड़े गले घास को खाना।

एक वार यह रोग जिन जानवरों के होजाता है फिर तमाम उम्र नहीं होता। मगर इस बीमारी के यहाँ ७५% से ६०%

तक जानवर मरते देखे जाते हैं । यह रोग भी एक प्रकार के कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न हुआ करता है । अतः जहाँ तक हो अपने पशुओं की भली प्रकार से देख भाल हो और ऐसी बातों से बचाना चाहिए, जिनसे यह रोग पैदा होता है ।

रोग की पहचान

यह रोग जानवरों में कई किस्म से होता है, किंतु भारत मे जो खास चिन्ह देखे जाते हैं, वह यह हैं—

जोर का बुखार, गर्मी १०५° से १०६° तक हो जाती है। साँस लेने मे कष्ट होता है । मुँह से लार निकलती है। गले मे सूजन नाक व आँख की झिल्ली का रंग बैगनी हो होजाता है, साँस लेने से खरखराहट की आवाज कई गज दूर से सुनाई देती है । नाक से पीला-पीला मवाद चिप-चिपाहटदार निकलने लगता है । सूजन सीने तक पहुँच जाती है, जोकि छूने से कड़ी व गर्म होती है । पेशाब कम खून सा और गोबर पतला व खून मिला होता है ।

बीमारी की म्याद एक से तीन दिन तक है । इससे ज्याद दिनोंतक अगर कोई पशु जिंदा रहा तो बस वह बच गय मगर कभी - कभी तो जानवर १-२ घंटे मे ही मर जाते हैं ।

जानवर के मर जाने पर यदि उसे चीड़कर देखें तो—

(१) जबान बहुत सूजी है और गले में बैंजनी रंग के धब्बे मिलेंगे।

(२) सूजन को चीरो तो भूरे रंग का पीला-पीला मवाद निकलेगा। यह मवाद लसदार होता है। काले खून के धब्बे भी होंगे।

(३) गले के पास की गिल्टियाँ फूली और उनमे जगह जगह खून लगा होता है।

(४) नरखरे और फेफड़ों में लाल रंग का फेनदार मवाद होता है और फेफड़ों में खून जम जाता है।

(५) दिल पिलपिला होगा, और उसमे कम जमा हुआ खून होगा।

(६) खून सारे शरीर का जैसा होना चाहिए, होगा।

(७) तिल्ली भी जैसी चाहिए, होगी।

(८) चौथे मेदे (Fourth Stomach) मे और आँतों में खून मिला मवाद पाया जायगा और आँतों आदि के अंदर की झिल्ली पर खून के धब्बे अक्सर नजर आते हैं।

चिकित्सा

सफाई आदि का विशेष ध्यान रखते हुए टीका लगवा दीजिए। टीका से विशेष लाभ होता देखा गया है।

खाने की चीजों मे पतला दलिया ही दो। पानी साफ और ताजा हो। यह बीमारी शुरू होते ही बढ़कर बड़ी जल्दी आखिरी हद तक पहुँच जाती है। अगर शुरू होते ही इलाज न किया, तो फिर बड़ी मुश्किल हो जाया करती है।

(१) गले की सूजन को गर्म लोहे से दाग सकते हैं।

(२) घी ꠰२

एप्समसाल्ट ꠰१

काला जीरा ꠰।

कालीमिर्च ꠰।

सबको बारीक कर घी में मिलाकर तुरंत पिला दो।

(३) तेल जमालगोटा ३० बूँद

तेल मीठा ꠰।–

तेल अलसी ꠰।–

सबको मिलाकर पिला दो। फिटकरी के पानी से मुँह धोओ।

(४) बीज धतूरा ।=) भर

कपूर ।॥) "

शराब ꠰॥ सेर

माँड़ में नमक डालकर उसी में ऊपरी दवायें मिलाकर पिलाओ।

(५) बेलाडोना (Belladonna)

मरक्यूरियस आयोडिस (Mercurius Iodatus Ix)

दोनों दवायें मिला ५-१० बूँद तक २-२ घंटे बाद पिलाओ

(६) डेपथीरियम ६ बूँद

दिन में दो बार पिलाते रहो।

सूजन के स्थान पर निम्न-लिखित लेप लगाओः—

(१) तुख्म शरीफा हमवज़न

कौंच वीज	बराबर
जंतयाना	,,
मग्ज चिलगोजा	,,

सब चीजें बराबर लेकर चिलगोजे के तेल में जरूरत के मुताबिक पीस थोड़ा गर्म लगाओ।

(२) तुख्म साहज़र्म	२ तोला
सुहागा खाम	१ ,,
तूतिया	६ माशा
जाफरान	३ ,,
जर्दी अंडा मुर्ग	२ तोला
मुसब्बर	१ ,,
चर्बी बुज	२ ,,

पहले चर्बी को गर्म करे, बाद को और दवाओं का चूर्ण उसी मे हल करे और नम गर्म लेप करे।

(३) छिपकली	१
लहसुन	३ तोला
कन्दस्याह ८ साल का	५ ,,

सबको खरल कर लगाओ, बड़ा ही लाभप्रद है। अनुभूत है। अब कुछ पिलाने की दवाएँ लिखते हैं, जिनसे दस्त लगेंगे—

(१) सोंठ	२ तो०
रोगनजर्द	२० ,,

दूध भैंस का गाय को ४० तोला (अगर भैस है तो गाय का दूध लेवे)

नमक नली ५ तो०

सब दवाएँ मिलाकर नम गर्म पिला दो। अनुभूत है।

(२) सुरमा १ तोला

तुरबद ६ माशा

रब्बुलसूस ६ ,,

गोंद कतीरा ६ ,,

गुलकन्द ४ तोला

सबको गुलकन्द मे घोटकर २० तोले नमगर्म पानी में पिला दो।

(३) नमक लाहौरी ऽ।= छटाँक

मुसब्बर १। तोला

सोंठ १। ,,

शीरा ४ ,,

सब चीज़ों को ऽ१। गर्म पानी मे मिलाकर पिला दो परीक्षित है।

(४) तेल मीठा ऽ।–

तेल अलसी ऽ।–

तेल जमालगोटा ३० बूँद

सबको मिलाकर पिला दो। परीक्षित है।

(?) नई हाँडी मे गोबटे की आग जलाओ। कपास

बीज, नेनुओं का सूखा झोंझ, कुम्हड़े का सूखा लत्तर, सरसों की सूखी डॉंठ और ताड़ के सूखे वाल, सबके टुकड़े करके हॉड़ी के अन्दर आग पर डाल दो। बहुत धुआँ होगा। यह धुआँ मवेशी की नाक-तले रक्खो। जब जलने लगे, धाह देने लगे, तो उस पर धान के भूसी डाल दो, धाह ढककर धुआँ निकलने लगेगा। लार खूब निकलेगी और माथा हलका हो जाएगा।

(२) चूर्ण गंधक २ तोला और चूर्ण शुंठी २ तोला)।। सेर भात के मॉड़ के साथ मिलाकर खिलाओ।

भौंरा रोग

इसे अँगरेजी मे 'एन्थ्रेक्स' (Anthrax) 'कारबोन' (Charbon) 'स्प्लेनिक फीवर' (Splenic fever) कहते हैं। हिंदी में गोली, गिल्टी, गरही, दरका, खुरदवा, ओदरो, सूत, चक्कर का रोग, बावला, निकाला, पटका, मरी, घुड़का, घेसी, चपरा, घोटुवा, तिलहा, बोगमा, बेसारी आदि अनेक नामों से पुकारते हैं।

बीमारी छूत की और बहुत जल्दी एक से दूसरे जानवर को लगनेवाली है। रोग एक खास किस्म के जहरीले मादे से होता है। पशु अचानक बीमार होते और मर जाते हैं। यह रोग हर देश मे होता है और पुराना है। यह रोग सभी जानवरों, परिन्दों और आदमियों तक के हो जाता है, मगर हाँ, यह कुत्तों और सुअरों को लगता तक नहीं।

रोग कीड़ों से पैदा होता है। कीड़े विना खुर्दवीन के नहीं दिखाई पड़ सकते। यह कीड़े खाल के जख्मों से या खाने-पीने के साथ अथवा साँस लेने से शरीर मे प्रविष्ट होकर रक्त क अन्दर अति शीघ्र और लाखों कीड़े पैदा कर देते हैं। अतः लाजिमी है कि इस रोग से मरे जानवरों को या तो जला दे अथवा गहरे गड्ढों मे गाड़ दे। उनका गोवर, पेशाव भी रोजाना गाडा जाना चाहिए।

शरीर मे कीड़ों के पहुँचने के १२ घंटों से लेकर ४८ घटों के वाद वीमारी की अलामातें नजर आने लगती हैं। यहाँ पर इस रोग से ८०% से १००% तक पशुओं की मृत्यु होते देखी गई है। अन्य देशों में तो इससे भी कहीं और अधिक मौतें होती हैं।

रोग की पहचान

रोग अत्यन्त शीघ्र फैलता है। अधिकतर वीमार पशु मरे ही पाए जाते हैं। वुखार १०६° से १०७०° तक हो जाता है आँखों में सूजन व आँखों की झिल्ली का लाल होना, नाड़ी का तेज्र चलना, शरीर का फड़कना, नाक से खून मिला मवाद का निकलना, गोवर में खून लगा होता है। पेशाव गहिरे लाल या काले रंग कैसा होता है। पशु लड़खड़ा-लड़खड़ाकर गिरता है, और १० से २४ घंटे में मर जाता है। कभी-कभी तबियत में बड़ा जोश-सा होता है, जिससे मालूम पड़ता है कि जानवर पागल हो गया है। शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में

सूजन आ जाती है। यह सूजन ठीक वैसी ही होती है, जैसी कि गलघोंटू रोग की। सूजन बहुधा गले के आस-पास ही होती है।

यदि मरने पर पशु को चीड़कर देखें, तो लाश में सड़न शीघ्र पैदा हो जाती है। वह फूल जाती है। मरने के कुछ घंटे बाद ही लाश से बड़ी दुर्गंध आने लगती है। जिस्म मरने के बाद अकड़ता नहीं। खून काला पड जाता है। देखने मे तारकोल-सा होता है, मगर पतला हो जाता है। तिल्ली बहुत नरम हो जाती है। वह बढ़ जाती है। उसमें काले धूने-सा खून भरा होने से फूल जाती है। फेफडों, कलेजे, गुरदों और दूसरी गिल्टियों मे खून जमा होता है और वे अकसर सूजी होती हैं। आँतों के अन्दर मवाद में खून मिला पाया जाता है। चौथे पेट की झिल्ली और छोटी आँतों के अन्दर की झिल्ली का रंग लाल हो जाता है, और कभी-कभी जखम भी देखे जाते हैं।

चिकित्सा

सबसे अच्छी दवा टीका लगवाना है। सफाई और एहितयात बहुत ज्यादा करना चाहिए। यह रोग मनुष्यों को भी हो जाता है, फिर बचना मुश्किल हो जाता है। इस बीमारी के लिए 'एन्टी एन्थ्रेक्स सीरम' बडा हितकर है। दवा से कुछ लाभ नहीं होता, ताहम ऐसी दवा देनी चाहिए, जो सड़न को रोककर ताकत दे। दवा नीचे लिखते हैं:—

(१) तेल तारपीन   २॥ तोले

तेल अलसी   ऽ॥=

दोनों को मिलाकर पिलाओ।

(२) फिनाइल   ऽ२॥

पानी   ऽ२॥

दोनों को मिलाकर पिलाओ।

सूजन को लाल लोहे से दाग देना लाभप्रद होगा।

जहरबाद

इसको अंगरेजी में, ब्लैक-क्वार्टर (Black-quarter) 'क्वार्टर इल(Quarter-ill) 'ब्लैक लेग (Blackleg) और 'कारबोन सिम्टोमेटिक' कहते हैं।

हिन्दी में गोली, सुजवा, बेल्लई, इकटंगा, अधरंग, सूभा, लगड़िया, चिरचिरा, तिलवढ़, बिसेहरी, पनबोदर, गढुवा, वागी,मंग, गठिया, और डाभा आदि नामों से प्रसिद्ध है।

यह रोग भी उड़कर लगनेवाला है। यहरोग गाय, भैंस,भेड़ बकरी और ऊँटों को भी होजाता है। आदमियों को भी रोग लग जाना है। रोग बहुधा ३ मास से लेकर ४ वर्ष तक के जानवरों को हुआ करना है। पुराने जानवरों को बहुत ही कम होना है। यह रोग वनिस्बत दुबले तथा कमजोर जानवरों के मोटे तन्दुरुस्तों को ज्यादा होना है। रोग एक बार जिन्दे हो जाना है फिर कभी नहीं होना। जब बरसात शुरू होती है, और जमीन में सीलन तथा जगह २ पानी भर जाता है यह

रोग शुरू होता है। बहुधा नीचे तराई के स्थानों में यह हर साल एक ही समय मे हुआ करता। इन्ही जमीनो मे इस रोग के कीड़े बने रहते हैं और वही से जानवरों के अन्दर घास के साथ २ चले जाते हैं। बीमारी की मियाद २-४ दिन तक की है।

रोग की पहचान

रोग शुरू होकर शीघ्र ही आखीर दर्जे तक पहुँच जाता है। जानवर १ से ३ दिन में मर जाता है। जानवर सुस्त होकर अलग चुपचाप खड़ा रहता है। अगर चलता या चलाया जाता है तो पशु लँगड़ाता हुआ नजर आता है। शरीर मे सूजन आ जाती है। खासकर रान के ऊपर, गर्दन और शानों, सीने के नीचे, कमर और पीठ पर होती है। कुछ घंटों में ही सूजन बढ़ जाती है। यह पुट्ठों और कूखों तक बढ़ जाती है, सूजन को दबाएँ तो चिरचिराती सी मालूम पड़ती हैं जैसे उसमें हवा भरी हुई हो, सूजन ठंडी और वादी ऐसी होती है। उसका रंग काला होता है। कभी कभी उसमे सड़न के चिह्न पाये जाते हैं। अगर इस सूजन मे नश्तर दें तो उसमे से बहुत, सा हवा कैसा मवाद निकलकर उड़ता है। और काले रग का पानी, जिसमे खट्टीखट्टी बू आती है, निकलता है। इसी रोग से ६० से१०० फीसदी तक पशु मर जाते हैं।

जानवरों के मरने पर उसकी सूजन कीगिलटियों को चीर कर देखें तो, उसका मांस मैले भूरे व काले रंग का होगा

ये गिल्टियाँ सडी और देखने मे तर मालूम होती हैं। दवाने से कडी बदबू निकलेगी। सूजन के आसपास होनेवाली गिल्टियां बढ़ जाती हैं, जिनमें खून भर जाता है। शरीर के अन्दर के हिस्सों मे कोई नई बात पैदा नहीं होती है। सब अङ्गों में खून निकला हुआ होता है और कभी-कभी आँतों के अन्दर मवाद से खून मिला होता है। तिल्ली और खून की दशा जैसी होनी चाहिए, वैसी ही हुआ करती है।

इस रोग मे 'गलघोंटू' और 'भौरा' रोग का धोका हो सकता है। मगर इस रोग की सूजन खास किस्म की होती है। और इस रोग मे तिल्ली व खून मे कोई भी तब्दीली नहीं पाई जाती, जैसी कि गलघोंटू और एन्थ्रेक्स' रोगों मे।

चिकित्सा

जैसे ही रोग की शुरूआत हो, इसका अर्क (Serum) पिलाना चाहिए। अन्य औषधियाँ लाभकर न होंगी। यह रोग शुरु होते ही अन्त तक पहुँच जाता है और इतनी जल्दी दवा करने का वक्त नहीं मिल पाता, सूजन को लोटे से [illegible] सकते हैं या [illegible] चीरकर जख्म की दवा जो कि मल[illegible] , कर

(२) फिनाइल ʃ२॥
पानी ʃ२॥

दोनो को मिलाकर पिलाओ। यह सड़न को रोक कर शरीर को ताक़त देगी।

जब सूजन किसी टॉग पर हो, तो ऊपर की तरफ कसकर बांध दो और उसे चीर डालो; वाद को सड़न रोकनेवाली दवाओं से इलाज करो। सफाई और एहितयात काफी रखना चाहिए। इस वीमारी को रोकने के लिए साल मे दो वार टीका लगवाना चाहिए। जहाँ-जहाँ इस बीमारी के होने की सम्भावना हो, वहाँ वहाँ जानवरों को न आने दे। बीमार जानवरों की लाशों को या तो जला देना चहिए या ६-६ फीट के गड्ढों में खोदकर गाड़ देना चाहिए। अगर बीमारी होने की सम्भावना हो। तो अपने यहाँ के पशु-डॉक्टर को लिखकर टीका लगवा लेना चाहिए। टीका बीमारी के मासम के शुरु होने के पहले यानी मई के महीने मे ही लगवा लेना मुनासिव है। एक वार टीका लगवाने से उस जानवर के शरीर मे ४ - ५ महीने तक असर वना रहता है।

जर्द बुखार

इसको अँगरेजी मे टिक फीवर (Tick fever) रेड वाटर (Red water) 'टोपिकल रेड वाटर (Tropical red water) 'टेक्सास फीवर, (Texas fever) 'वोवा इन पेरोपलास मोसिस '(Bovine piroplasmosis) कहते हैं।

ये गिल्टियाँ सड़ी और देखने मे तर मालूम होती हैं। दवाने से कड़ी वदवू निकलेगी। सूजन के आसपास होनेवाली गिल्टियां वढ जाती हैं, जिनमें खून भर जाता है। शरीर के अन्दर के हिस्सों मे कोई नई वात पैदा नहीं होती है। सव अङ्गों में खून निकला हुआ होता है और कभी-कभी आतों के अन्दर मवाद से खून मिला होता है। तिल्ली और खून की दशा जैसी होनी चाहिए, वैसी ही हुआ करती है।

इस रोग में 'गलघोंटू' और 'भौंरा' रोग का धोका हो सकता है। मगर इस रोग की सूजन खास किस्म की होती है। और इस रोग मे तिल्ली व खून मे कोई भी तब्दीली नहीं पाई जाती, जैसी कि गलघोंटू और एन्थ्रेक्स' रोगों मे।

चिकित्सा

जैसे ही रोग की शुरूआत हो, इसका अर्क (Serum) पिलाना चाहिए। अन्य ओषधियाँ लाभकर न होंगी। यह रोग शुरु होते ही अन्त तक पहुँच जाता है और इतनी जल्दी दवा करने का वक्त नहीं मिल पाता. सूजन को लोहे से दाग सकते हैं या उसे चीरकर जख्म की दवा जो कि सड़न को रोक सके, कर सकते हैं। दवायें ये हैं—

(१) तेल तारपीन　　　　॥ तोला

　　तेल अलसी　　　　॥=　,,

दोनों मिलाकर पिलाने से लाभ होगा।

(२) फिनाइल ƒ२॥

पानी ƒ२॥

दोनो को मिलाकर पिलाओ। यह सड़न को रोक कर शरीर को ताक़त देगी।

जब सूजन किसी टॉग पर हो, तो ऊपर की तरफ कसकर वांध दो और उसे चीर डालो, वाद को सड़न रोकनेवाली दवाओं से इलाज करो। सफाई और एहितयात काफी रखना चाहिए। इस बीमारी को रोकने के लिए साल मे दो वार टीका लगवाना चाहिए। जहॉ-जहॉ इस बीमारी के होने की सम्भावना हो, वहाँ वहाँ जानवरों को न आने दे। बीमार जानवरों की लाशों को या तो जला देना चहिए या ६-६ फीट के गड्ढों में खोदकर गाड़ देना चाहिए। अगर बीमारी होने की सम्भावना हो। तो अपने यहॉ के पशु-डॉक्टर को लिखकर टीका लगवा लेना चाहिए। टीका बीमारी के मासम के शुरु होने के पहले यानी मई के महीने में ही लगवा लेना मुनासिव है। एक वार टीका लगवाने से उस जानवर के शरीर में ४ - ५ महीने तक असर वना रहता है।

ज़र्द बुखार

इसको अॅगरेजी में टिक फीवर (Tick fever) रेड वाटर (Red water) 'ट्रोपिकल रेड वाटर (Tropical red water) 'टेक्सास फीवर, (Texas fever) 'बोवा इन पेरोपलास मोसिस '(Bovine piroplasmosis) कहते हैं।

मगर हिंदी में इसके लाल पेशाव, रक्त मूत्र, 'जर्द बुखार आदि नाम ही प्रसिद्ध हैं।

यह छूत का रोग है, और एक प्रकार का मलेरिया की किस्म का है। यह रोग किल्लियों से फैलता है। ये कीड़े गाय, बैल, भैंस की खाल से चिपके रहते हैं। ये कीड़े (१) तो जानवरों का खून चूसा करते हैं और (२) बीमार जानवरों से अच्छे जानवरों में बीमारी फैला देते हैं। यह रोग यहाँ बहुत होता है और अधिकतर पशु इससे दुःखित रहते हैं।

जानवरों में यह बुखार ४ दिन से लेकर कई एक हफ्तों तक रह सकता है। मगर अलामतें ३ - ४ दिन में ही जाहिर होने लगती हैं।

रोग की पहचान

रोग दो प्रकार की हालतों का होता है। (१) तो तेज किस्म और (२) हल्की किस्म का, जो ज्यादा दिनों तक रहता है। यह रोग पहिली किस्म का तो गर्मी में और दूसरी किस्म का अक्सर सर्दियों में होता है।

पहली पहचान तो यह है कि शरीर गर्म हो जाता है। सिर व कान नीचे को झुक जाया करते हैं। शक्ल से सुस्ती और बदहवासी पाई जायगी। शुरू में पेट में दर्द और खूनी दस्त आ सकते हैं। मगर अक्सर कब्ज रहता है। पशु दुबला हो जाता है। तेज किस्म के रोग में पशु मरते मरते अति क्षीण नहीं होने पाता। इस रोग से मुक्त होने पर बहुत दिनों तक

पशु दुर्बल रहते हैं। जानवर के खडे होने की दशा मे उसके पिछले पैर डगमगाया करते हैं। जब रोग तेजी पर होता है तो पेशाव का रंग लाल से बदल कर गहरा भूरा या काला हो जाता है।

जिन पशुओं को यह रोग होता है, उनमें ४० से ६० फीसदी तक मर जाते हैं। तेज किस्म के रोग मे पशु २६ घंटे से ४८ घंटे तक मे मर जाते हैं, मगर जब मामूली तरह की होता है, तो बराबर जानवर कमज़ोर होकर १४–१५ दिन मे मर जाता है।

मरने के बाद देखे तो पशु का गोश्त नर्म और ढीला होगा। खून नहीं होता। गोश्त बहुत कम रह जाता है। आंतों और चौथे मेदे की झिल्लियों पर लाल धब्बे होंगे। जो कि खून जम जाने के खास चिह्न हैं। दिल के अन्दर की झिल्ली पर भी लाल धब्बे होंगे। तिल्ली बहुत बढ़ जाती है और उसमे खून जमा हो जाता है। कलेजी भी बढ़ जाती है और उसका रंग पहिले से ज्यादा हल्का होगा। वह बहुत नर्म होगी। इस रोग मे और 'एन्थ्रेक्स' मे धोखा हो जाता है, मगर इसकी सबसे बड़ी पहचान यही है कि जानवरों की लाश को चीरने पर बदन के रेशों मे खून न निकले, तो समझ लो उसे चर्द बुखार या 'टिक फिवर' ही है।

चिकित्सा

जैसे रोग होता मालूम पड़े, फौरन् पशु डॉक्टर को खबर दो। इस रोग के लिए ('Trypanblau') की पिचकारी

लगवाना चाहिये। साथ २ खाना मुलायम, दस्तावर देना चाहिये। जुलाब भी दे सकते हैं। जुलाब की दवा यह है—

रेंडी का तेल ऽ।-
अलसी का तेल ऽ≡

दोनो को मिलाकर पिलाओ। जब दस्त लग चुकें, तो पशु को रोज ≡) भर कुनैन देते रहो। सुबह-शाम पशु को यह दवा उभारनेवाली भी दो—

नौसादर ऽ०। पैसाभर
अजवाइन १) भर

दोनों को ऽ१। पानी में मिलाकर पिलाओ। जानवर अच्छे हो जाने पर ताकत की दवा जरूर पिलाते रहना चाहिये। दवा यह है:—

(१)	सौंफ	१ तोला
	चिरायता	॥ ,,
	इलायची	१ ,,
	अजवाइन	१ ,,

सब मिलाकर रोजाना खाने के साथ दिया करो।

(२)	अजवाइन	ऽ-
	अजमोद	ऽ-
	हल्दी	ऽ-
	हर्रे	ऽ-
	बहेड़ा	ऽ-

आँवला	ऽ–
सोंठ	ऽ–
मिर्च	ऽ–
पीपल	ऽ–
भँगरा	ऽ–
भाँग	ऽ–
भारंगी	ऽ–
पाँचो नमक	ऽ।–

सब का चूर्ण कर रख छोड़ो। रोज टका भर चूर्ण आटे का पिण्ड बना उसमें रख कर खिलाया करो। परीक्षित है।

चेचक

यह अँगरेजी में 'काऊ पाक्स' (Cow Pox) कहलाता है। हिन्दी में माता या चेचक कहते हैं। रोग छूत का है। आदमी तक को लग जाता है। जब यह पालतू जानवरों को होता है, तो सबसे ज्यादा जोर से भेड़ों को होता है। पंजाब मे यह ऊँटों को बहुत जोरों से होता है। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी मुर्गी, ऊँट, घोड़ा और सुअर सभी को होता है। यह रोग भी कीड़ों ही से होता है।

रोग बहुधा थनों के ऊपर और अंडकोषों पर ही होता है। छोटे-छोटे बच्चों के ओठों और चेहरे पर प्रतीत होगा। रोग बहुधा ४–६ दिन में पूर्ण रुप से फैल जाया करता है।

रोग की परीक्षा

पशु को हल्का बुखार होगा। दूध घटेगा। तब २–३ दिन के बाद थनों आदि स्थानों पर लाली और सूजन आ जाएगी और फिर छोटे-छोटे ज्वार-जैसे दाने दिखलाई पड़ेंगे। वे २–३ दिन मे बढ़कर फफोले बन जायँगे। वे गोलाकार होंगे और उनके चारों ओर लालामी अवश्य होगी। फुंसियों के पकने मे ८–१० दिन तक लगते हैं। बाद को वे फूट जाती हैं और लाल २ घाव-सा रह जाता है और वह भी कुछ काल के बाद भर जाता है। ये फुंसियाँ कभी-कभी तो १ या २ और कभी २ इस से ज्यादा और ज्यादा से ज्यादा २० तक होती है, मगर वे सब एक साथ नहीं होती। ४ से १४ दिन में जितनी निकलनी होगी, सब निकल आती हैं।

चिकित्सा

शक होते ही अच्छे पशु को बीमार पशु से अलग कर दो जहाँ पर रोग हो, वहाँ गर्म पानी से धोकर घी मल दो। सब दूध दुह लो। अगर गाय तंग करे, तो पिछले पैर बाँध, थनों के नीचे गर्म पानी का घड़ा रखकर बफारा दो। जब थन मुलायम हो जायँ, तो सूखे कपड़े से पोंछकर घी लगा दो। तब फिर दुहो। मगर फफोलों पर उँगलियाँ न पड़ें। सफाई का खास ध्यान रहे।

बीमारी के लिये टीका लगवा देना चाहिये। अगर थनों में सूजन ज्यादा है, तो यह दवा दो—

एकोनाइट (Aconite Ix)
बेलाडोना (Belladonna Ix)
हर चार-चार घंटे पर १०--१० बूँद दवा पिलाओ।

चेचक पकने के कब्ल सेमर के बीज का खिलाना परमोपयोगी है। यह तीन दिन सेवन कराना चाहिए—

(१) पहला दिन पहली बार २५ बीज दूसरी बार १८ तीसरी बार १०
दूसरे दिन " " १५ " " " १०
तीसरे दिन " " १० फिर कुछ नहीं

बीज पीसकर केले के पत्ते के साथ मोड़कर खिला दो—पशु कमजोर या कमसिन हो, तो ५-७ बीज कम करके देना।

पथ्य—मॉड, जल उबालकर देना चाहिए। कम पानी पिलाओ और खर-पतवार, खली व सूखी घास वर्जित है।

पीने को, गंधक	१ तोला
शोरा	१ ,,
चिरायता	१ ,,
बच	६ माशा
शराब	१ छटांक

आध सेर पानी में मिलाकर दो बार दिन मे दीजिए।

दस्त आना

इसे अंगरेजी मे 'डायरिया' (Diarrhoea) और हिंदी में पेट चलना, दस्त लगना और इसहाल कहते हैं।

रोग की परीक्षा

पशु को हल्का बुखार होगा। दूध घटेगा। तब २-३ दिन के वाद थनों आदि स्थानों पर लाली और सूजन आ जाएगी और फिर छोटे-छोटे ज्वार-जैसे दाने दिखलाई पड़ेंगे। वे २- दिन में वढ़कर फफोले वन जायँगे। वे गोलाकार होंगे और उनके चारों ओर लालामी अवश्य होगी। फुंसियों के पकने में ८-१० दिन तक लगते हैं। वाद को वे फूट जाती हैं और लाल २ घाव-सा रह जाता है और वह भी कुछ काल के वाद भर जाता है। ये फुंसियाँ कभी-कभी तो १ या २ और कभी २ इस से ज्यादा और ज्यादा से ज्यादा २० तक होती हैं, मगर वे सव एक साथ नहीं होती। ४ से १४ दिन में जितनी निकलनी होगीं, सव निकल आती हैं।

चिकित्सा

शक होते ही अच्छे पशु को वीमार पशु से अलग कर दो। जहाँ पर रोग हो, वहाँ गर्म पानी से धोकर घी मल दो। सब दूध दुह लो। अगर गाय तंग करे, तो पिछले पैर वाँध, थनों के नीचे गर्म पानी का घड़ा रखकर वफारा दो। जब थन मुलायम हो जायँ, तो सूखे कपड़े से पोंछकर घी लगा दो और तव फिर दुहो। मगर फफोलों पर उँगलियाँ न पड़ें। सफाई का खास ख्याल रहे।

वीमारी के लिये टीका लगवा देना चाहिये। अगर थनों में सूजन ज्यादा है, तो यह दवा दो—

एकोनाइट (Aconite Ix)
बेलाडोना (Belladonna Ix)
हर चार-चार घंटे पर १०--१० बूँद दवा पिलाओ।

चेचक पकने के कब्ल सेमर के बीज का खिलाना परमोपयोगी है। यह तीन दिन सेवन कराना चाहिए—

(१) पहला दिन पहली बार २५ बीज दूसरी बार १८
तीसरी बार १०
दूसरे दिन " " १५ " " " १०
तीसरे दिन " " १० फिर कुछ नहीं

बीज पीसकर केले के पत्ते के साथ मोड़कर खिला दो—पशु कमजोर या कमसिन हो, तो ५-७ बीज कम करके देना।

पथ्य—मॉड, जल उबालकर देना चाहिए। कम पानी पिलाओ और खर-पतवार, खली व सूखी घास वर्जित है।

पीने को, गंधक	१ तोला
शोरा	१ "
चिरायता	१ "
वच	६ माशा
शराब	१ छटाँक

आध सेर पानी में मिलाकर दो वार दिन में दीजिए।

दस्त आना

इसे अँगरेजी में 'डायरिया' (Diarrhoea) और हिंदी में पेट चलना, दस्त लगना और इसहाल कहते हैं।

रोग की परीक्षा

पशु को हल्का बुखार होगा। दूध घटेगा। तब २-३ दिन के वाद थनों आदि स्थानों पर लाली और सूजन आ जाएगी और फिर छोटे-छोटे ज्वार-जैसे दाने दिखलाई पड़ेंगे। वे २-३ दिन मे वढ़कर फफोले बन जायँगे। वे गोलाकार होंगे और उनके चारों ओर लालामी अवश्य होगी। फुंसियों के पकने में ८-१० दिन तक लगते हैं। वाद को वे फूट जाती हैं और लाल २ घाव-सा रह जाता है और वह भी कुछ काल के वाद भर जाता है। ये फुंसियाँ कभी-कभी तो १ या २ और कभी २ इस से ज्यादा और ज्यादा से ज्यादा २० तक होती हैं, मगर वे सव एक साथ नहीं होती। ४ से १४ दिन में जितनी निकलनी होगीं, सव निकल आती हैं।

चिकित्सा

शक होते ही अच्छे पशु को बीमार पशु से अलग कर दो जहाँ पर रोग हो, वहाँ गर्म पानी से धोकर घी मल दो। सब दूध दुह लो। अगर गाय तंग करे, तो पिछले पैर बाँध, थनों के नीचे गर्म पानी का घड़ा रखकर वफारा दो। जब थन मुलायम हो जायँ, तो सूखे कपड़े से पोंछकर घी लगा दो। तब फिर दुहो। मगर फफोलों पर उँगलियाँ न पड़ें। सफाई का खास ख्याल रहे।

बीमारी के लिये टीका लगवा देना चाहिये। अगर थनों में सूजन ज्यादा है, तो यह दवा दो—

एकोनाइट (Aconite Ix)
बेलाडोना (Belladonna Ix)
हर चार-चार घंटे पर १०--१० बूँद दवा पिलाओ।

चेचक पकने के कब्ल सेमर के बीज का खिलाना परमो-पयोगी है। यह तीन दिन सेवन कराना चाहिए—

(१) पहला दिन पहली बार २५ बीज दूसरी बार १५ तीसरी बार १०
दूसरे दिन " " १५ " " " १०
तीसरे दिन " " १० फिर कुछ नहीं

बीज पीसकर केले के पत्ते के साथ मोड़कर खिला दो—पशु कमजोर या कमसिन हो, तो ५-७ बीज कम करके देना।

पथ्य—मॉड, जल उबालकर देना चाहिए। कम पानी पिलाओ और खर-पतवार, खली व सूखी घास वर्जित है।

पीने को, गंधक	१ तोला
शोरा	१ "
चिरायता	१ "
बच	६ माशा
शराब	१ छटॉक

आध सेर पानी में मिलाकर दो बार दिन में दीजिए।

दस्त आना

इसे अँगरेजी में 'डायरिया' (Diarrhoea) और हिंदी में पेट चलना, दस्त लगना और इसहाल कहते हैं।

वार-वार दस्त आते हैं। और कोई जिस्मानी अलामतें नहीं होतीं, मगर हाँ कभी २ पेट में तकलीफ होने की अलामतें पाई जाती हैं। दस्त पतले पानी से लगते हैं।

रोग वहुधा खराब चारा या तेज़ क़िस्म का असर रखनेवाली घास के खाने से होता है। गंदे पानी पीने से भी रोग होता है।

यह रोग खास कर दो प्रकार से होता है, (१) सर्दी से और (२) गर्मी से। अगर सर्दी से हो, तो ये दवायें करोः—

चिकित्सा

(१) जवाखार, सज्जी, साँभरनमक, सैंधा, सोंचर, हल्दी, हर्र आँवला, वहेड़ा, जीरा श्वेत, भाँग, जीरा स्याह, कचूर, देवदार मिर्चकाली, पीपर, पीपरामूर, वीजसोवा, वीजमूली, शतावर वायविडंग, असगंधनागोरी, सोंठ, अंजवाइन, अजमोद सहजनकी छाल—सव टका-टका-भर ले चूर्ण करो रख लो। नित्य प्रातः ֊) भर खिलाने से अवश्य वादी तथा सर्दी के दस्त दूर होंगे।

(२) नूनिया ।) भर घोलकर ऽ।। गर्म जल में पिलाओ।

अगर दस्त गर्मी से लगें, तो ये दवायें करोः—

(१) कतीरागोंद ऽ— शाम को भिगोकर प्रातः जौ के आटे के साथ खिला दो।

(२) धनियाँ, जीरा सफ़ेद, टका-टका भर भाँग ऽ— सबको चूर्ण करो और जौ के आटे में आधा शाम आधा सुबह खिलाओ।

(३) फालसे की छाल ऽ= पीसकर जौ के आटे मे प्रातः
ायं खिलाईए।

(४) अल्सी ऽ= पीसकर जौ के आटे मे खिलाने से दस्त
द हो जाते हैं। सर्दी-गर्मी दोनों प्रकार के दस्तों को हितकारी
वायें:—

(१) नमककाला २॥) भर हीराकसीस १) भर जौ के आटे
खिलाओ चार दिन तक।

(२) सौफ, अजवाइन, बड़ी इलायची ये तोला-तोला भर
ौर चिरायता ३) भर सबका चर्ण कर ऽ॥ जौ के आटे मे चार
ुन खिलाओ।

(३) वेल का गूदा ऽ=, खड़िया २॥ तोला में मिला आधी
ुवहआधी शाम ऽ॥ गाय के मट्ठे मे घोलकर पिलाओ।

(४) खड़िया १ औंस, गोंद १ औंस, अफीम ४ ड्राम, कत्था
औंस, सबका चूर्ण कर जौ के आटे मे खिलाओ।

(५) धनियॉ, सेंधानमक सम भाग पीसकर जौ के आटे में
खलाने से गर्मी का रक्त पोंकना अवश्य दूर हो। परीक्षित है।

(६) पलास का गोंद सवा तोले चूर्ण चिरायता ॥) आना
र चूर्ण चौखल्ली ।=) आना भर, अफीम -) आना भर इन
बको चूर्णकर ऽ- देशी शराब मिलाकर भात के मांड मे
खलाओ।

(७) अफीम -) आना भर सफेदा ऽ॥ सेर, चूर्ण चौखल्ली
- तीनों को मिला कर खिलाओ।

यदि दस्त खूनी साधारण हों, तो पहले यह दवायें दीजिए—

(१) कटैया के कोमल साग, गुलच, नीम की छाल सब १। तोले सब साथ साथ पीसकर केले के पत्ते में मरोड़कर खिला दो।

(२) चिउड़े का गुंडा और चम्पा केला दोनों मिला खिलाओ।

(३) बाँस का पत्ता खिलाओ।

साढ़

इसे अँगरेजी में 'गरगेट' (Garget) या मेमा (mammitis) कहते हैं। यह रोग दूध देने वाले को होता है। इससे पशु काफी दुख उठाते हैं। यह खासकर नीचे लिखे कारणों से होता है:—

(१) बार-बार और कुसमय में दूध निकालने से।

(२) थनों में दुह कर दूध छोड़ देने से।

(३) थनों में चोट लग जाने से।

(४) गोबर करते समय पिछले पुट्ठे पर लाठी मारने से

(५) दुहते समय जोर से दबाने से।

(६) बच्चे के देर तक थन खींचने से।

(७) विषैले कीड़े आदि के काटने से।

(८) सड़े पानी में बैठने और पीने से।

(९) सड़ा चारा खाने से।

(१०) ज्यादा गर्मी या सर्दी लग जाने से।

जाना ; बच्चा होने के पहले अधिक खिलाना ; थनो को धोकर न पोछना ; बच्चा होने के पहले दूध का अधिक उतरना, मगर दुहा न जाना, दुहकर थनो मे दूध को छोड़ देना ; थनो के छेदों से 'स्ट्रेप्टोकोकस' (Streptococcus) नामक कीटाणुओ का प्रविष्ट हो जाना। इनके अतिरिक्त अन्य कीटाणु भी प्रविष्ट हो सकते है।

रोग की पहिचान

गाय ; बछड़े को थन नहीं पकड़ने देगी ; थन सूझे होगे ; छोटी, कड़ी गिल्टियाँ हाथो से छूने से मालूम होगी, थन लाल होंगे ; बुखार होगा ; नाड़ी तेज होगी, जुगाली करना बन्द हो जाता है, दूध खूनी और मवाद मिला होगा, खासकर पहले प्रसव के बाद यह रोग अधिक हुआ करता है। अधिक दुधार पशुओ का ज्यादा होता है।

चिकित्सा

(१) सुअर की चर्बी और तेल तारपीन मिलाकर दिन में २-३ बार मलो।

(२) अंडी के कुनकुने तेल को दिन में ३-४ बार मालिश करो।

(३) कलमी शोरा ‌ ‌/‌- को गर्म पानी ‌/‌।। में डालकर ३ दिन पिलाओ।

(४) गोवर /१ साबुन /= तूतिया १ तो० उचित

(४) दोनों समय सब दूध निकाल कर थनों को खाली कर दो।

(५) बच्चे को दूध पीने दो।

(६) घी ऽ॥ कालीमिर्च ऽ— रस नींबू ऽ= सब मिला ३ दिन तक पिलाओ।

(७) पीब पड़ गई हो तो चिरा सकते हो।

(८) मर्ज ज्यादा हो तो घी ऽ१ गुड़ पुराना ऽ१ कालाज ऽ॥ कालीमिर्च ऽ॥ सब को एककर पिलाना चाहिये।

(९) सेंहजने की पत्ती ऽ॥ नमक ऽ— कालीमिर्च २॥ सबको लेकर कूट-छानकर ३ दिन तक पिलाओ।

(१०) अगर मौसम गरमा हो तो मुनासिब है कि तेल और आजवाइन को कांसी के बर्तन से पुट्ठों पर मलो

रक्त दूध

अक्सर दूध दुहने से रक्त-जैसा लाल दूध निकलता ऐसी स्थिति में यह दवा दो—

(१) रेंडी या नीमी के थोड़े तेल में बत्तख या ऽ अंडे की सफेदी ५-७ दिन खिलाओ।

थनों की सूजन

इसे अँगरेजी में 'इन्फ्लेमेसन ऑफ दी अडर' (In- mation of the Udder) कहते हैं।

जाना ; बच्चा होने के पहले अधिक खिलाना ; थनो को धोकर न पोछना ; बच्चा होने के पहले दूध का अधिक उतरना, मगर दुहा न जाना, दुहकर थनो मे दूध को छोड़ देना ; थनो के छेदो से 'स्ट्रेप्टोकोकस' (Streptococcus) नामक कीटाणुओ का प्रविष्ट हो जाना। इनके अतिरिक्त अन्य कीटाणु भी प्रविष्ट हो सकते है।

रोग की पहिचान

गाय ; बछड़े को थन नहीं पकड़ने देगी ; थन सूझे होगे ; छोटी, कड़ी गिल्टियाँ हाथो से छूने से मालूम होगी, थन लाल होंगे ; बुखार होगा ; नाड़ी तेज होगी, जुगाली करना बन्द हो जाता है, दूध खूनी और मवाद मिला होगा, खासकर पहले प्रसव के वाद यह रोग अधिक हुआ करता है। अधिक दुधार पशुओं का ज्यादा होता है।

चिकित्सा

(१) सुअर की चर्बी और तेल तारपीन मिलाकर दिन में २-३ वार मलो।

(२) अंडी के कुनकुने तेल को दिन में ३-४ वार मालिश करो।

(३) कलमी शोरा ़ऽ– को गर्म पानी ऽ॥ में डालकर ३ दिन पिलाओ।

(४) गोवर ऽ१ सावुन ऽ= तूतिया १ तो० उचित जल

मिलाकर १-२ उबाल दे, उतार लो और गर्म कपड़ा से थनों पर सेक करो। दवा पतली रहे। आधे घंटे तक सेको मगर ठंडी न होने पाये।

(५) बहुत सी मूलियाँ काटकर ५-६ सेर पानी मे पकाओ, जब खीर-सी गाढ़ी हो जाय, गर्म २ आध घंटे तक थनों (udder) पर लेप करो।

(६) देशी नमक की कुछ पोटलियाँ बाँधकर पास आग जलाकर कोयले बना ले और उसी का सेक करे।

(७) कपूर ३) भर पोस्ता के दाने २०) भर (मगर अफीम न निकली हो) दोनो को ς२ पानी में पकाओ। जब ¼ भाग से भी कम रहे तो छानकर उसी मे तैल तिल्ली ς≈ डालकर उसी की मालिश करो।

(८) नीम के पत्तो को किसी बर्तन में पानी डालकर उबालो और उसी भाप मे थनो का सेक करो।

(९) चूर्ण हल्दी और चूना खाने का बराबर-बराबर मिला कर थनों पर मलो और ς॥ सेर तेल रेंडी गर्म पानी के साथ पिलाओ।

(१०) 'एकोनीटम नेप' (Aconitum nap. 1x.) ब्राई-ओनिया (Bry. alb. 1x 10 drops alternately) बारी-बारी से १०—१० बूँद ३-३ घंटे बाद पिलाओ।

(११) बेलाडोना (Belladonna 1x)

दस बूँद हर ३ घंटे बाद पिलाओ।

(१२) नौसादर २ मा० केशर २ मा० बाबूना सूखा १ तो० सबका चूर्णकर देशी शराब मे डालकर पिला दो।

स्तन के घाव

स्तनों पर घाव हो जाने से उन्हे भली प्रकार धोकर साफ करो और—

(१) घी, मक्खन या मलाई मलने से लाभ होता है। यदि ज्यादा हो और पक गया हो और मवाद निकला करता तो—

(२) फिटकरी, मोम व सफेदा सम भाग लेकर घी मे मिला मलहम बना लो और लगाओ। पहले घी और मोम एक थ मथिये पीछे से फिटकरी और सफेदा मिला दो। मलहम ट्टी या पत्थर के बर्तन मे तैयार करना ठीक होगा।

प्रसूत ज्वर

इसे अँग्रेजी 'मिल्क-फीवर' (Milk-fever) 'पारचूरेन्ट वर' (Parturient fever) 'पारचूरेन्ट एपोप्लेक्सी' Parturient apoplexy) कहते है। हिन्दी मे प्रसूत र व उर्दू मे जिचगी का बुखार कहते है।

दुधार जानवरो मे यह रोग अत्यधिक होता है, मगर कम र देनेवाली गायों को होता ही नहीं। यहाँ बहुत ही कम रोग होता है। यह ज्यादातर अच्छी मोटी ताजी गायो को ता है, ऐसा खयाल है कि १०० रोगियों मे से ७५ जरूर मर ते हैं।

(१) थोड़ा ग्लेसरीन व कार्बोलिक एसिड पानी में डालकर पिलाने से लाभ होगा।

थन मरना

इसे अँगरेजी मे 'ब्लाइन्डटीट्स' (Blind Teats) कहते है। अगर कभी भी पशु को "चन्द्री" 'अगियारी, या 'साड़' में से एक भी रोग हो गया, तो थन मारे जाया करते हैं। मरे हुए थनों से दूध नहीं निकलता।

चिकित्सा

जब थनों का मारा पशु गाभिन हो जाय तो उसे ऽ। सरसों का तेल हर चन्द्रमा की द्वितीया को जब तक वह बच्चा न दे, पिलाते रहो। बच्चा देने के १ या २ घंटे प्रथम हींग २॥ भर चने या जौ की रोटी मे रखकर खिला दो। इस प्रयो से बच्चा हो जाने पर थन खुल जाते हैं।

अगर किसी कारण से दूध देने वाले पशु का थन शीघ्र ही बन्द हो गया हो तो :—

काला जीरा ऽ= काली मिर्च ऽ= दोनो पीसकर ऽ॥ गर्म पानी में मिलाकर दिन में दो बार ३ दिन तक पिलाओ।

थनों का कटना

इसे अँगरेजी में 'सोर टीट्स' (Sore Teats) के नाम से पुकारते हैं। यह रोग बहुधा बच्चे के दाँत मार देने से; ठीक दुहाई न करने से; नई ब्याई गाय के थनों से भली प्रकार

चिकित्सा

(१) आक का दूध ; लहसुन, साँप की केंचुल सबको सम भाग लो और पीसकर घाव पर बाँध कर पट्टी बाँधो ।

(२) गो-घृत गर्म करो उसी में दो नीम की कोपलो की टिक्की बनाकर लाल करो। बाद को टिक्की निकालकर फेंक दो और उस घी को घावो पर दिन मे ३-४ बार मालिश किया करो ।

अगियारी

यह रोग भी थनो का ही रोग है। अगर इसका ठीक-ठीक इलाज न हो पाया, तो इसी से साड़ू यानी 'मेमाइटिस' हो जाता है।

रोग की पहचान

इस रोग में थनों के सोतों पर एक प्रकार की पीली-पीली पपड़ी जम जाती है, फिर वही पपड़ी फुंसी के रूप मे लाल रंग की हो जाती है। बाद को बढ़ते बढ़ते थन में घुसती है। दवा ठीक और समय पर न हुई तो वही साड़ू हो जाती है।

चिकित्सा

(१) अडी के तेल मे थोड़ा-सा नमक डाल गर्मकर ३-४ बार दिन मे मलो।

(२) नीम पत्तों की भाप से सेको।

(३) पानी ऽ१ मे कत्था ऽ। घोलकर पिला दो।

बाँझपन

इसे अँगरेजी में 'स्टेरिलिटी' (Sterility) कहते हैं। यह रोग विलायत आदि देशो मे उतना नहीं, जितना यहाँ है। कभी कभी तो ऐसा देखा गया है कि गाय बच्चा ही नहीं जनती और कभी-कभी दो एक बार व्याने के बाद फिर नहीं व्याती।

इसके होने के मुख्य कारण यह हैं:—

(१) खाना जरूरत से ज्यादा देना और कोई जिस्मानी काम न लेना।

(२) छोटे मे अच्छी तरह पालन-पोषण न करना।

(३) समय पर साँड़ का न मिल सकना।

(४) दो बच्चे साथ पैदा होने से मादा बाँझ होगी।

चिकित्सा

(१) पशु को साँड के साथ दिन रात रहने दो।

(२) निपुण डाक्टर से गर्भाशय खुला दीजिए।

(३) सन के हरे पत्ते ‌ऽ१ रोजाना खिलाइये।

(४) तेल सरसों मे मुर्गी के ४ अंडे घोटकर ८ दिन पिलाओ।

(५) जाड़े में सोंठ ऽ—अजवाइन ऽ— को गुड़ ऽ॥ मे औटकर २१ दिन पिलाओ।

(६) ज्वार की सूखी चरी काट कर खिलाओ।

(७) बिनोले ऽ३ उबालकर उसमे ऽ। भर कड़ुआ तेल डाल कर २१ दिन पिलाओ।

(८) फास्फेट ऑफ् सोडा २॥ तोला से कई बार योनि धोओ, जब तक गर्भ न रहे।

(९) छुहारे की ७ गुठली ७ दिन वासी जौ के आटे की रोटी में रखकर खिलाओ।

(१०) मेथी का भूसा बराबर ८ दिन तक खिलाओ।

(११) मेथी ऽ।= उबालकर ४ दिन तक नित्य प्रातः खिलाओ।

(१२) जंगली कबूतर की बीट ऽ– नित्य ३ दिन खिलाओ, गर्भ रहेगा। परीक्षित है।

(१३) गेहूँ ऽ४ मैथी ऽ१॥ मट्ठा भैंस का ।ऽ लेकर सबको एक वर्तन मे घोलो। वर्तन का मुँह कपड़े से बाँधकर २० दिन घूरे मे गाड़े रहो। बाद को निकालकर सात दिन खिलाओ, गर्भ रहेगा। परीक्षित है।

अगर कोई भैंस या गाय नाथे पर ठहरती न हो, तो ये दवायें दो.—

(१) गेहूँ ऽ४ भीगे हुए मैथुन के बाद खिला दो। या

(२) लसोड़े के पत्ते ऽ२ सेर तुरंत खिला दो। गर्भ ठहरेगा।

तूजाना

यह अँगरेजी मे 'एवोर्सन' (Abortion) 'प्रीमेच्युरबर्थ'

'प्रीमेच्युर काविङ्ग' व 'सिलिकिंङ्ग' कहते है। यह मर्ज ६० फीसदी कीटाणुओं से होता है। यह कीटाणु गर्भाशय और उस झिल्ली में जिससे कि बच्चा लपटा रहता है, पाये जाते हैं। इनके कारण गर्भाशय ढीला पड़ जाता है, और वह बच्चा फिसलकर गिर जाता है। यह कीटाणु 'बेसिलस एबॉर्टस' (Bacillus abortus) के नाम से प्रसिद्ध है। यह कीड़े केवल गर्भाशय के और कहीं नहीं रहते हैं। कभी कभी तो ये बराबर बने ही रहते हैं, जिससे कि पशु लगातार ३-४ बार तक तू जाय करते हैं। कभी कभी ऐसा भी होता देखा गया है कि कीड़े मौजूद रहे, मगर गर्भ नहीं गिरा। कभी-कभी कीटाणुओं के न होने पर भी गर्भ गिर जाया करते हैं; उसके मुख्य कारण ये हैं.—

(१) गर्भाशय मे सींग य चोट के लग जाने से।

(२) गर्भावस्था में गाय पर साँड़ के मैथुन करने से।

(३) पेट फूलने से।

(४) बार-बार जुलाब की दवा अधिक मात्रा में देने से।

(५) विषैली वस्तु खा लेने से।

(६) गाभिन गाय के पीछे कुत्ता दौड़ने से।

(७) अधिक ठंडक य गर्मी लगने से।

(८) गंदगी मे रहने व गंदा खाना-पानी के व्यौहार से।

(९) अधिक डर, परिश्रम तथा तोप, बादल के भयान... सुनने से।

(१०) नाक द्वारा पानी पी जाने व अन्य रक्त-विकारो से।
इसकी कोई खास दवा नही, मगर हाँ, इन ऊपर बतलाये
हुये कारणो से अवश्य बचाव रखना चाहिए। अगर गर्भ गिर
गया हो, मगर भर (Plesenta) न गिरी हो, तो उसको
निकालने की कोशिश करनी चाहिए, वरना वह अंदर गलन
पैदा कर देगी। गर्भ गिर जाने पर भर न गिरने पर नीचे की
दवाएँ दो, लाभ होगाः—

(१) गुड़ पुराना ऽ२ अजवाइन ऽ= सोठ ऽ= पीपल ऽ-,
पीपरामूर २॥ तोले सबको मिलाकर गर्मी हो तो, एक बार और
जाड़ा हो तो दोनों समय दो।

(२) जंगली तुरई ऽ।, नमक ऽ=, गर्मपानी ऽ॥ सब को
मिलाकर दिन मे दो बार पिलाओ। ईश्वर चाहेगा, तो
फायदा होगा।

पेट फूलना

ऑगरेजी मे 'होविन' (Hoven) 'ब्लोटिङ्ग' (Bloating)
'टिम्पनाइटिस ऑफ् दी रूमिन' (Tympanites of the
rumen) कहते है। हिन्दी मे भी अफरा, ओफरा, पठा
लगना, वगैव और सिमला कहते हैं।

इस रोग मे पहला पेट (Rumen) या ओझड़ी हवा से
फूल जाता है। ऊपर देखने से पेट नगाड़ा सा तन जाता है।
पशु चल नहीं पाता। जुगाली बन्द होकर चुपचाप खड़ा या
पड़ा रहता है। पाखाना पेशाब भी नही करता कभी-कभी तो

(११) लाल मिर्च ६ मा०, अदरख ४ तो०, हींग भुनी १ तो० सबको पीस गोली बना गर्म जल के साथ ३-३ घटे पर खिलाओ।

(१२) अंडी या अलसी का तेल ≶॥। पिला दो।

(१३) पशु को खूब दौड़ाओ।

(१४) इंद्रायन फल का गूदा और साबुन दोनो को पीस कर कपड़ा पर चुपड़कर उसकी बत्ती बना ,गुदा में रक्खो दस्त होंगे।

(१५) तेल रंडी ≶। गौ दूध ≶१ मे मिला गर्म कर पिलाने से वायु खुलेगी।

(१६) खारी नमक ≶— गुड़ ≶। दोनो को पानी मे औटाकर पिलाओ।

(१७) गाय का दूध और घी सम भाग मिलाकर पिला दो।

अगर पेट सर्दी की बदहज्मी से फूला हो, तो यह दवा दोः—

(१) कुटकी, लहसुन, कालाजीरी बराबर पीस आटे में मिला कर खिला दो।

अगर पेट गर्मी की बदहज्मी से फूले तोः—

(१) सौंफ, धनिया, जीरा, सम भाग ले जौ के आटे में खिला दो।

(२) कदम्ब के पत्तो का रस ≶= पिला दो।

(३) गुड़ ऽ≈ चूर्ण हल्दी ऽ– दोनो का लड्डू खिला दो।

नेत्र रोग

आँख मे लालामी रहती है। दिन-भर आँखों से आँसू बहते रहते है और कीचड़ आता है। यदि यह दशा हो तो जान लो आँख मे पीड़ा है। ये दवाएँ करनी चाहिये।

चिकित्सा

(१) सुअर का विष्टा एक टका भर खिला दो।

(२) रजस्वला स्त्री के रक्त का भीगा वस्त्र खिलाने से लाभ होगा।

(३) फिटकरी मे गुलाब-जल घोलकर लगाने से लाभ होता है।

ढलका

आँखों मे यदि रात - दिन आँसू बहें, तो यह दवा करो कुछ ही काल बाद अवश्य लाभ होगा।

चिकित्सा

(१) सीगो के बीच में गड्ढा होता है। उसी में पीछे अंड का तेल ५-७ दिन डालने से नेत्र शीतल होंगे और ढलका मिटेगा।

चोट

आँखो में अगर कुछ चोट लग जाय या कीड़ा-मकोड़ा मर दे और पानी बहना रहे, तो यह दवा कीजिए।

चिकित्सा

(१) थोड़ा नमक या फटकरी पानी में घोल कर छान लो, उसी से धोओ।

(२) सूर्य्य-प्रकाश से ३-४ दिन आँखें बचाओ।

(३) सहजने के पत्ते और नमक को रात को भिगोकर प्रातः उसी जल से धोओ। ऐसा करने से लाभ होगा।

आंखों में भिलावा लगाना

कभी-कभी पशु के नेत्र फोड़ने को उनमें भिलावा भर देते हैं। ऐसा करने से आँखों मे सूजन बहुत दिखाने लगती है।

दवा

(१) कुटकी को महीन पीसकर नेत्रों में भर दो, ईश्वर चाहेगा तो अवश्य लाभ होगा।

फुल्ली-माड़ा

यह बहुधा आँखों के बिगड़ने या कुछ चोट आदि के लग जाने से आँखों में पड़ जाया करता है। जानवर की कुछ-कुछ निगाह में भी फर्क पड़ने लगता है।

चिकित्सा

(१) आक का दूध धेला भर लेकर उसी में ७ बूँद शीरा मिला रवि के दिन ७ बार अँगुली बोर-बोर आँख के चारो तरफ लगाओ। इस प्रकार दवा लगाने से खाल निकल जायगी और फूली मिटेगी।

(३) गुड़ ऽ= चूर्ण हल्दी ऽ- दोनो का लड्डू खिला दो।

नेत्र रोग

आँख मे लालामी रहती है। दिन-भर आँखो से आँसू बहते रहते है और कीचड़ आता है। यदि यह दशा हो तो जान लो आँख में पीड़ा है। ये दवाएँ करनी चाहिये।

चिकित्सा

(१) सुअर का विष्ठा एक टका भर खिला दो।

(२) रजस्वला स्त्री के रक्त का भीगा वस्त्र खिलाने लाभ होगा।

(३) फिटकरी में गुलाब-जल घोलकर लगाने से ल होता है।

ढलका

आँखों से यदि रात - दिन आँसू बहें, तो यह दवा क कुछ ही काल बाद अवश्य लाभ होगा।

चिकित्सा

(१) सींगों के बीच में गड्ढा होता है। उसी में पीछे का तेल ५-७ दिन डालने से नेत्र शीतल होंगे और ढ मिटेगा।

चोट

आँखों में अगर कुछ चोट लग जाय या कीड़ा-मकोड़ा दे और पानी बहता रहे, तो यह दवा कीजिए।

(२) सहजने के पत्ते और नमक को मिट्टी के बर्तन मे रात को भिगा दो। प्रातः उसी पानी से आँख धोओ। परीक्षित है।

(३) हरी चूडी को वारीक पीसो और सिरस के पत्तों के रस को उसी मे डालकर खरल करो। जब सुरमा सा हो जाय, तो सुखा कर रख लो। एक चुटकी ले आँख में भर दो। परीक्षित है। सात दिन तक लगाओ। फुल्ली और ठेठर अच्छे होंगे।

रतौंधी

इस रोग मे पशु को दिन में तो दिखलाता है, मगर रात को बिल्कुल नहीं दिखलाता। ऐसी दशा में यह दवा करो।

चिकित्सा

(१) शहत ऽ= मछली का पित्ता ऽ= ले दोनों को घेप कर रख छोड़ो और अंजन लगाओ। पाँच दिन मे लाभ होगा।

(२) हुक्के का कीट पानी मे घिसकर लगाओ।

(३) गुंजा के पत्तों के रस को आँखों मे लगाओ।

जाला-ठेठर

(१) हाथी का नाखून पानी मे घिसकर २१ दिन लगाओ सब प्रकार के नेत्र रोग मिटेंगे।

(२) बाँझ खिरनी और गजनख बराबर-बराबर ले नीं के रस में घोटो। ८ दिन लगाने से ठेठर और फूली मिटे

(२) सहजने के पत्ते और नमक को मिट्टी के बर्तन में रात को भिगा दो। प्रातः उसी पानी से आँख धोओ। परीक्षित है।

(३) हरी चूडी को बारीक पीसो और सिरस के पत्तों के रस को उसी मे डालकर खरल करो। जब सुरमा सा हो जाय, तो सुखा कर रख लो। एक चुटकी ले आँख में भर दो। परीक्षित है। सात दिन तक लगाओ। फुल्ली और टेंटर अच्छे होंगे।

रतौंधी

इस रोग मे पशु को दिन में तो दिखलाता है, मगर रात को बिल्कुल नहीं दिखलाता। ऐसी दशा में यह दवा करो।

चिकित्सा

(१) शहत ऽ= मछली का पित्ता ऽ= ले दोनों को घेप कर रख छोडो और अंजन लगाओ। पाँच दिन मे लाभ होगा।

(२) हुक्कों का कीट पानी मे घिसकर लगाओ।

(३) गुंजा के पत्तों के रस को आँखो मे लगाओ।

जाला-टेंटर

(१) हाथी का नाखून पानी में घिसकर २१ दिन लगाओ। सब प्रकार के नेत्र रोग मिटेंगे।

(२) बीज खिरनी और गजनख बराबर-बराबर ले नीम के रस में घोटो। ८ दिन लगाने मे टेंटर और फूली मिटे।

(३) सुरमा, चाकसू का रस, शोरा कलमी, हाथी दाँत सब सम भाग ले नींबू के रस में खरल कर चना-सी गोली कर सुखा लो। पानी में घिसकर लगाने से जाला कटेगा। परीक्षित है।

ताव-लगना

यह रोग बहुधा क्वार और भादो मे होता है। इस मे पशु कड़ा गोबर करता है; शरीर कमजोर हो जाता है, उदास रहता है; बाल मोटे हो जाते हैं और सूख जाता है।

इसके होने के मुख्य दो निम्न कारण हैं:—

(१) भादौ और क्वार मे जब धूप ज्यादा होती है, तो गायें, भैंसें पानी मे बैठती है। कभी-कभी पानी कम और गर्म होता है। जिससे पशु सारा न भीग कर एक ही तरफ भीगता है।

(२) वर्षा मे पशु दिन-भर भीगकर शाम को घर आते हैं और वहाँ एकदम बन्द घर में बाँध दिए जाते है, जिससे कि सर्दी-गर्मी से यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा

अगर ताव सर्दी से लगा हो, तो यह दवाएँ दो:—

(१) पुरानी मूँज ऽ। लेकर महीन काट काटो और ऽ१ गुड़ में डालो औटाकर ४ रोज रोजाना दोबारा पिलाओ।

(२) पशु की पूँछ मे नश्तर लगाकर २ रत्ती अफीम भर कर बाँध दो।

(३) गूगल २॥ तो०, पाव-पाव भर आटे की दो रोटिय में भर कर आग मे दबा दो, जब गूगल भुन जाए निकाल लो और ४ दिन खिलाओ।

अगर ताव गर्मी से लगा हो, तो ये दवाएँ दोः—

(१) मसूर की दाल ऽ॥ मे ४ तो० नमक डाल कर उबाल कर ४ दिन खिलाओ।

(२) शीशम; लभेरा और बबूल की पत्तियों को २४ घंटे पानी मे भिगो दो। बाद को निकालकर आँवला ऽ। खाँड़ कच्ची ऽ। मिलाकर पिला दो।

(३) अगर पशु की साँस चले, तो थोड़ा-सा कपास सरसों के तेल में डुबो कर खिला दो।

फोड़ा, फुंमी व घाव

जहाँ तक हो सके फोड़ा, फुंसियों को दबाने की दवा करो। यह काफी तकलीफदेह होती है।

(१) सेमर की छाल, कचनार बराबर लो, पानी में पकाओ, फिर फुड़िया पर बाँध दो, सूजन जाती रहेगी। फुड़िया बैठ जायगी।

(२) गेरू, छाल जामुन, मकोई व नीम के पत्ते सब बराबर-बराबर पानी के साथ गर्म कर गुनगुना-गुनगुना लेप करो।

(३) अजवाइन, नीमछाल, रूमे के पत्ते सम भाग लो और गर्म कर गुनगुना-गुनगुना बाँधो।

(४) हल्दी, धनियाँ, सोवा के बीज, बाबूना के पत्ते सब बराबर लो, पानी मे पीस गर्म कर बाँधो।

अगर फुड़िया न बैठे, तो उनको पकाकर फोड़ दे। दवायें पकाने की नीचे लिखते हैं:—

(१) चावल मट्ठे मे पकावे, उसी मे नमक भी डाल दे। बाद को उतारकर गुनगुनी पुल्टिस बाँधे। फुड़िया पककर फूट जायेंगी।

(२) मैनफल, मुल्हैटी, सँभारू के पत्ते सब बराबर ले पानी में बाँटकर आग पर गर्म कर नीम गर्म बाँधो। परीक्षित है।

(३) दही और गेहूँ के दलिया को महीन पीस आग पर पकाओ। नीम गर्म बाँध दो।

(४) गुड़ और अजवाइन बराबर ले पीस डालो, फिर पानी मिला आग पर पकाओ, कुनकुना बाँधो, अवश्य पक कर फूटे। परीक्षित है।

(५) अंडा मुर्गी, विष्टा कबूतर और राई सम भाग पानी में पीसकर आग पर पकाकर बाँधो, फुड़िया पक कर फूटे। परीक्षित है।

फुड़िया फूट जाने पर अगर घाव हो गया हो, तो ये उपचार करने चाहिये.—

(१) घाव को नीम के पत्तो के पानी से धोकर बाद को नीम का ही तेल लगा दो।

(३) गूगल २॥ तो०, पाव-पाव भर आटे की दो रोटिय में भर कर आग मे दबा दो, जब गूगल भुन जाए निकाल लो और ४ दिन खिलाओ।

अगर ताव गर्मी मे लगा हो, तो ये दवाएँ दोः—

(१) मसूर की दाल ɔ॥ मे ४ तो० नमक डाल कर उबाल कर ४ दिन खिलाओ।

(२) शीशम; लभेरा और बबूल की पत्तियों को २४ घंटे पानी मे भिगो दो। बाद को निकालकर आँवला ɔ। खाँड़ कच्ची ɔ। मिलाकर पिला दो।

(३) अगर पशु की साँस चले, तो थोड़ा-सा कपास सरसों के तेल में डुबो कर खिला दो।

फोड़ा, फुंमी व घाव

जहाँ तक हो सके फोड़ा, फुसियों को दबाने की दवा करो। यह काफी तकलीफदेह होती है।

(१) सेमर की छाल, कचनार बराबर लो, पानी मे पकाओ, फिर फुड़िया पर बाँध दो, सूजन जाती रहेगी। फुड़िया बैठ जायगी।

(२) गेरू, छाल जामुन, मकोई व नीम के पत्ते सब बराबर-बराबर पानी के साथ गर्म कर गुनगुना-गुनगुना लेप करो।

(३) अजवाइन, नीमछाल, रूसे के पत्ते सम भाग लो और गर्म कर गुनगुना-गुनगुना बाँधो।

(३) गूगल ॥ तो०, पाव-पाव भर आटे की दो रोटियों में भर कर आग में दबा दो, जब गूगल भुन जाए निकाल लो और ४ दिन खिलाओ।

अगर ताव गर्मी से लगा हो, तो ये दवाएँ दो:—

(१) मसूर की दाल ｣॥ में ४ तो० नमक डाल कर उबाल कर ४ दिन खिलाओ।

(२) शीशम, लभेरा और बबूल की पत्तियों को २४ घंटे पानी में भिगो दो। बाद को निकालकर आँवला ｣। खाँड़ कच्ची ｣। मिलाकर पिला दो।

(३) अगर पशु की साँस चले, तो थोड़ा-सा कपास सरसों के तेल में डुबो कर खिला दो।

फोड़ा, फुंसी व घाव

जहाँ तक हो सके फोड़ा, फुंसियों को दबाने की दवा करो। यह काफी तकलीफदेह होती है।

(१) सेमर की छाल, कचनार बराबर लो, पानी में पकाओ, फिर फुड़िया पर बाँध दो, सूजन जाती रहेगी। फुड़िया बैठ जायगी।

(२) गेरू, छाल जामुन, मकोय व नीम के पत्ते सब बराबर-बराबर पानी के साथ गर्म कर गुनगुना-गुनगुना लेप करो।

(३) अजवाइन, नीमछाल, रूसे के पत्ते सम भाग लो और गर्म कर गुनगुना-गुनगुना बाँधो।

(२) तेल सरसों ऽ—, तेल तारपीन ऽ—, कपूर ऽ—, फिनाइल १।) भर सब मिलाकर घाव पर लगाते रहो।

(३) पत्थर का कोयला, खड़िया, तूतिया, फिटकिरी, सबका चूर्ण कर घावों पर लगाते रहो। घाव खुला न रहे।

अगर घाव मे कीड़े पड़ गये हों तो:—

(१) आड़ू और मरुआ दोनो के पत्तों की टिकिया घाव पर रख ऊपर से मुल्तानी मिट्टी से लेप दो, हवा न जाने पाये।

(२) कपूर १ माशा तेल तारपीन ६ माशा तैल मीठा ४ तोला मिलाकर लगाओ। कीड़े मर जाएँगे।

अगर घाव से पीव आती हो, तो नारियल का तैल चुपड़ो।

मल्हम जो घाव को जल्दी अच्छा करे :—

(१) मुरदासंग, तूतिया, राल सब पैसा-पैसा-भर नीम की कोंपें ३) भर पीस लो। सबको ऽ= गोघृत में डाल पका लो। जब सब भस्म हो जायँ तो खूब रगड़ लो। कपड़े पर चुपड़कर घाव पर लगाओ।

अगर घाव बहुत दिन का हो गया हो, मिटता न हो; पीव और पानी बहता हो, तो उसे नासूर समझ लो, यह दवा करो—

(१) मुरदासंग १) हल्दी १) गुलेनार सूखे १) सुरमा की डली १) फटकरी हुनी १) बारासिंघा १) अस्थनन्द-भस्म १) भर

भर, तेल मीठा १०) भर सबको खूब मिला, जानवर के चट्टे छुड़ा कर लगाओ।

(३) कलकतिया तंबाखू खाने की पानी में भिगो, उसी का अर्क, खाज को कपड़े से रगड़-रगड़ कर खूब मलो।

(४) देशी साबुन और तैल तारपीन से बछड़ों को नित्य धोओ। गंधक और तूतिया मिलाकर लगाओ।

(५) पीपल के हरे पत्ते पानी मे पीसो और उसी में कड़ुवा तेल मिला कर मलो।

(६) पीपल के पत्तों की राख कड़ुवा तेल मे मिलाकर ८ दिन तक लगाओ। ३-४ घंटे बाद नहवा दो। दोनो प्रकार की खुजली मिटेगी। परीक्षित है।

(७) नमक 5- साबुन 5= दोनों को पानी में मिलाकर मालिश करो।

(८) दही और बारूद मिलाकर १० दिन लगाओ; दोनो खुजली मिटें।

(९) साम को उर्द की दाल 5। भिगो दो। प्रातः उसी में लाल मिर्च 5- मिलाकर बाटो और पशु के शरीर पर मलो। ग्यारह दिन मे तर व खुश्क दोनों खुजली आराम हो।

(१०) हुक्के के पानी मे तंबाखू भिगोकर मालिश करो। पन्द्रह दिन के अन्दर तर, खुश्क दोनों खुजली मिटें।

पसली या हड्डी की चोट

यह बहुधा आपस मे लड़ने-भिड़ने अथवा मारने से, ज्यादा

चोट लगने से, यह शिकायत हो जाया करती है। ऐसी हालत हो तो पशु-डॉक्टर को दिखलवाये मगर जब तक वह न मिल सके तब तक तो कम से कम नीचे के उपचारों मे से कोई न कोई तो अवश्य करते रहना चाहिए :—

चिकित्सा

(१) पीपल की हरी छाल को पानी ⟆५ मे चढ़ा दो, जब पानी ⟆२ रह जाये तो उसे उतार कर उसी से धीरे-धीरे कुनकुना-कुनकुना सेंक करते रहो।

(२) भेड़ के दूध मे पीली कटाई डालकर औटा लो फिर चोट के स्थान पर मलो और लेप करके छोड़ दो।

(३) फिटकरी ⟆— हल्दी २॥ तोले लेकर ⟆१ दूध में डालकर फौरन पिला दो।

सुखरना रोग

यह रोग गाय व भैंसों को बच्चा जनने पर होता है। बच्चा होने के बाद कुछ दिन तक तो दूध बहुत निकलता है, मगर बाद को कुछ ही दिन बाद एकदम सूख जाता है।

चिकित्सा

(१) गाय का दूध ⟆२, शीरा ⟆१, दलिया गेहूँ ⟆१, चावल मोटे ⟆१ सबको मिलाकर ⟆२ पानी मे औटाकर आधा प्रातः

आधा सायंकाल खिला दिया करो, दूध अवश्य बढ़ेगा, परीक्षित है।

(२) पथरचटा जड़ ऽ- करेला के पत्ते ऽ= दोनो को पीस शाम - सुबह खिलाओ । दूध बढ़ेगा, परीक्षित है।

(३) सन के बीज का आटा ऽ१ शीरा ऽ१ मिला लो। सबके ३ भाग कर लो और दिन मे ३ बार ८ दिन तक खिलाओ, दूध बढ़ेगा।

(४) सोंठ ऽ- गुड़ ऽ। जौ के आटे में ७ दिन प्रातः-सायं खिलाओ।

(५) जड मतावर ऽ= पीसकर, १ माह खिलाने से दूध अवश्य बढ़े।

(६) दिन मे १ बार बरापडी शराब थनों पर मला करो।

(७) दिन मे २ बार गम घी व नमक को थनों पर मालिश किया करो। दूध सब निकाल लेना चाहिये।

खजिला-रोग

यह रोग भी जुवों और रूजी नामक कृमियों से पैदा होकर पशुओं को बड़ा दुखदायी होता है। जिस प्रकार जानवरों को किल्लियों आदि से तकलीफ होती है, ठीक वैसी ही इनसे भी होती है।

जिस जानवर के यह रोग पैदा होता है उसके शरीर

है। जानवर चारा कम खाता है, और देखने मे बदशक्ल सा हो जाता है।

चिकित्सा

(१) बिनुवा कंडो की राख पानी में मिलाकर शरीर भर मे कम से कम दो हफ्ते लगाये, तो लाभ हो।

(२) शरीफा के बीजों को जल में पीसकर लगाये, तो आराम हो।

(३) नोम के पत्तों को एक मिट्टी के बर्तन में भरकर पानी डाल खूब उबालो, बस उसी जल से १० दिन नहलाओ, लाभ हो।

(४) खिरनी के बीज पानी में पीसकर शरीर भर में मलो।

(५) साँभर नमक को खूब महीन पीस कर, रोजाना बीमारीवाले पशु की जबान पर १० दिन तक मलने से आराम हो।

(६) आवों की भस्म को कपड़छानकर हुक्के के जल के साथ देह भर में मलो।

(७) भुरजी के भाड़वाले घर का जाला और गेरू दोनों को सर्षप तैल मे मिलाकर मलने से रूजी मरैं और पीड़ा मिटे। यह कई बार का परीक्षित है।

किल्ली

इनको अंगरेजी मे टिक (Tick or Ornithodoros

megnini) कहते हैं। यह सभी पालतू जानवरों के कानों आदि स्थानों पर चिपकी रहती हैं। आदमियों के भी चिपक जाया करती हैं। इनसे जानवरों को बड़ी तकलीफ होती है। यह बहुत सी बीमारियाँ एक जानवर से दूसरे को लगा देती हैं। जैसे टिक फीवर, या जर्द बुखार वगैरा यह कान को छेदकर वहीं से खून पिया करती हैं। इससे पशु अच्छी स्वस्थ दशा मे नहीं रह पाता और अच्छी तरह खाना खा पी ही पाता व हज्म कर पाता है। अतः गायों, भैंसों का दूध कम हो जाता है।

चिकित्सा

(१) कलकतिया तंबाखू के पत्तो का पानी लगाओ।

(२) फिनाइल सल्यूशन लगाओ।

(३) कुछ आवश्यकतानुसार कुचलों को ले तेल सरसों मे जलाओ, बाद को कुचले निकालकर फेंक दो। इस तेल को किल्लियों पर लगाओ। यह तेल विष है।

(४) नील १ भाग, गंधक २ भाग ; तेल सरसों य वेसी' लीन ८ भाग सबको मिला कर पशु के शरीर पर लगाने से किल्लियाँ मर जायेंगी।

(५) नमक ४ भाग ; नेलमिट्टी १ भाग, तेल सरसों ४ भाग सबको मिलाकर शरीर पर मले।

(६) मुरक्ट की पत्ती जल मे बाँट कर लगाने से और को नहलाने से किल्लियाँ [illegible]

(७) भुरकुड की लकड़ी का खूँटा गाड़कर अगर उसी में पशु बाँधे, तो किल्लियाँ दूर हों।

सींग टूटना

यह खासकर दो कारणों से टूटते हैं—(१) आपस में लड़ने से, (२) गिरकर चोट लग जाने से अँगरेजी में इसे 'ब्रोकिन हॉर्न' (Broken Horn) कहते हैं।

यह दो प्रकार से टूटा करते हैं:—

(१) जड़ से और (२) ऊपरी भाग का टूटना और बिजी का रह जाना।

चिकित्सा

सींग टूटने से खून बहुत निकलता है, अतः पहले खून बंद करने के लिये यह दवा लगाओ—

फिटकरी १) भर जाला मकड़ी २) भर बारुद २) भर सब को पीसकर लगाओ। ऊपर से कपड़े का टुकड़ा रखकर मोम की टिक्की रखकर पट्टी बाँधो।

अगर सींग जड़ से टूट गया हो तो पहिले खून बंद करो, फिर ये दवायें लगाओ—

(१) बेरी की पत्ती बाँटकर भरो, ऊपर से पट्टी बांधो और नीम का तेल डालते रहो।

(२) कत्था बाँटकर बाल मिलाकर सींग में भरो और पट्टी बाँध दो। अगर सींग जड़ से न टूटा हो, तो यह दवा लगाएँ—

(१) उर्द की पिठी में सर के बाल सानकर सींग पर लगा दो और पट्टी बाँधकर ऊपर से नीम का तेल टपकाया करो।

(२) मुल्तानो मिट्टी को सींग पर लेपकर सींग पर बाल बांध दो।

(३) सीमेन्ट या चूना घाव में भरो, कपड़ा बाँधो और नीम का तेल डालते रहो।

(४) तेल तिल्ली २०) भर आग पर रक्खो और प्याज २०) भर नीम के पत्ते २०) भर भिलावा १०) भर सुहागा १) भर तूतिया ६ माशे, राल २) भर बेहरोजा २) भर बकरे की चर्बी २) भर, पहिली तीन चीजें भुना लो फिर पाँचों बकिया चीजों को मिलाकर मलहम बनाओ। ठंडा होने पर १०० पानी में मलहम धोकर काम में लाओ।

(५) कपड़े की राख, केश और चिथड़े की पट्टी बाँध देने से लाभ हो जाएगा।

गठिया या दर्द जोड़

इसे गठिया-वात तो हिंदी में और 'रूमाटिज्म' (Reumatism) अँगरेजी में कहते हैं। यह वात-रोग बड़ा कष्ट दायक होता है।

पहचान

गाँठों में दर्द होता है। मुँह, आँख और ओठों में सूजन आ जाती है। कभी-कभी तो सूजन थनों तक चली जाती है। अगले और पिछले पैरों के जोड़ों में सूजन आ जाती है।

पशु एक प्रकार से चलने-फिरने से लाचार सा हो जाया करता है।

चिकित्सा

(१) ऽ२ सेर सूखी या ऽ३ हरी गूमाबूटी को काटकर ऽ४ पानी में औटाओ। जब पानी ऽ१ रहे, तो बूटी निकालकर फेंक दो। पानी छान लो और उसी में कालीमिर्च ऽ− काला-नमक ऽ≡ पीसकर डालो। आठ या उससे कम ज्यादा दिन आवश्यकतानुसार पिलाओ।

(२) ऽ१ कड़वी तुरई को ऽ४ पानी में काढ़ा करो। जब पानी ऽ१ रहे तो छान लो और काली मिर्च ऽ= नमककाला ऽ। डालो और दो भाग करो। एक भाग प्रातः दूसरा सायं पिलाओ। दवा ४ दिन करो।

(३) चूर्ण मैथी ऽ१ में गुड़ ऽ॥, अजवाइन ऽ− मिला कर १४ दिन खिलाओ।

(४) गुड़ ऽ॥ मे २ नग घुँघचू पीसकर मिला दो और ४ दिन खिलाइए।

(६) ककडी ७), भर अजवाइन खुरासानी ४), लहसुन ५), भर नमक देशी २०) भर सब को शीरा घीकार मे मिलाकर गोली बनाकर ३ खुराकें करो।

(६) मुसब्बर ५ तो० सोठ १० तो० सूरजा तल्स ४ तो० गोल मिर्च कारी ८ तो० कशमीरी तिपर १० तो० सबको पीस सिरका से गोली बनाकर ४) भर की खूराक दो।

(७) नगौरी असगंध १०) भर मीठा तेलिया ७) भर पोस्तबीज मदार १०) भर सब २०) भर तिल तेल में सोख्ता करो और इसी तेल की मालिश करो।

सीत निकलना

इसको पित्त उछलना, सीत निकलना और रसपित्ती उछलना कहते हैं।

शरीर भर मे ददोर से पड़ जाते हैं। खाना बंद हो जाता है। यह विकार अजीर्णता से होता है। शरीर में सूजन आ जाती है।

चिकित्सा

कंबल उढ़ाकर ऐसी जगह बाँधो जहाँ सर्दी-गर्मी न हो यह दवा दो—

(१) गेरू ऽ। पीस शहद ऽ= गर्म पानी ऽ। के साथ मिला कर पिला दो।

(२) जुलाब को तेल अन्डी ऽ॥, तेल तारपीन १ तोला दोनें मिला कर पिला दो।

(३) महुआ के पेड़ की छाली ऽ=, चोकर गेहूँ ऽ=, गेरू ऽ—, नमक २ तो० अफीम धेलाभर, सब को बाटकर सर्षप तेल ऽ॥ सेर में मिलाकर शरीर भर में मलो और अगर जाड़ा हो

४) बेरी की लकड़ी का धुँआ देने व आग तपाने से लाभ है।

आँते बाहर निकलना

बहुधा जानवरों का आपस मे लड़ने-झगड़ने से पेट फट जाया करता है और आँतें बाहर निकल आती हैं, मगर पशु तुरंत मरता नहीं। ऐसी दशा में आँतों को भीतर करके पेट सी देना चाहिए।

चिकित्सा

(१) बया पक्षी का खेंजुआ घी मे भिगोकर जलाएँ और उसी से आँतों को सेक दें, अपने आप अन्दर चली जाएँगी।

(२) मक्खियों को पीसकर तुरंत आंतों पर चुपड़ देने से भी आंतें अपने आप बैठ जाती हैं।

(३) यदि कोई आँत फट गई हो, तो रेशम को जलाकर उसी आँत पर चिपका दो, फिर मूँजे के टांके से सी दो।

बांस निकलना

इसे अँगरेजी मे 'इन्वर्सन ऑफ् दी युटेरिस ऑर वूम्ब' (Invertion of the Uterus or womb) और हिंदी में बाँस निकलना या भेली निकलना कहते हैं। कभी-कभी जब यह लाल मांस का लोथड़ा बाहर निकल आता है, और कौए वगैरा चिड़ियाँ चोंचों के घाव कर देती हैं, तो फिर दवा करना बड़ा

(७) नगोरी असगंध १०) भर मीठा तेलिया ७) भर पोस्तबीख मदार १०) भर सब २०) भर तिल तैल में सोल्ता करो और इसी तेल की मालिश करो।

सीत निकलना

इसको पित्त उछलना, सीत निकलना और रसपित्ती उछलना कहते हैं।

शरीर भर मे ददोर से पड़ जाते हैं। खाना बंद हो जाता है। यह विकार अजीर्णता से होता है। शरीर में सूजन आ जाती है।

चिकित्सा

कंबल उढ़ाकर ऐसी जगह बाँधों जहाँ सर्दी गर्मी न हो। यह दवा दो—

(१) गेरू ｣। पीस शहद ｣= गर्म पानी ｣। के साथ मिलाकर पिला दो।

(२) जुलाब को तेल अल्सी ｣॥, तेल तारपीन १ तोला दोनों मिला कर पिला दो।

(३) महुआ के पेड़ की छाल ｣=, चोकर गेहूँ ｣=, गेरू ｣-, नमक २ तो० अफ़ीम धेलाभर, सब को बाटकर सर्षप तेल ｣। सेर में मिलाकर शरीर भर में मलो और अगर जाड़ा हो तो धुआँ से सेक दो।

(४) वेरी की लकड़ी का धुँआ देने व आग तपाने से लाभ होता है।

आँते बाहर निकलना

बहुधा जानवरों का आपस में लड़ने-झगडने से पेट फट जाया करता है और आँतें बाहर निकल आती हैं, मगर पशु तुरंत मरता नहीं। ऐसी दशा मे आँतों को भीतर करके पेट सी देना चाहिए।

चिकित्सा

(१) वया पक्षी का खेंजुआ घी में भिगोकर जलाएँ और उसी से आँतों को सेक दे, अपने आप अन्दर चली जाएँगी।

(२) मक्खियों को पीसकर तुरंत आंतों पर चुपड़ देने से भी आंतें अपने आप बैठ जाती हैं।

(३) यदि कोई आँत फट गई हो, तो रेशम को जलाकर उसी आँत पर चिपका दो, फिर मूँजे के टांके से सी दो।

वांस निकलना

इसे अँगरेजी मे 'इन्वर्सन ऑफ् दी युटेरिस ऑर वूम्व' Invertion of the Uterus or womb) और हिंदी मे वॉस निकलना या भेली निकलना कहते हैं। कभी-कभी जब यह लाल मांस का लोथडा वाहर निकल आता है, और कौए वगैरा चिड़ियों चोंचों के घाव कर देती हैं, तो फिर दवा करना बड़ा

कठिन हो जाया करता है। ज्यादातर यह बच्चा हो जाने के पहले या बाद को निकला करती है। अधिकतर कमजोरी से या ढीली पड़ जाने से निकला करती है। एक बार इसका निकलना शुरू हुआ नहीं कि फिर सदा के लिए यह इल्लत लग गई।

चिकित्सा

(१) इसके निकलते ही तुरंत फिटकिरी के पानी से धोकर फौरन् उसे अदर दबा दो और ऊपर से एक मुछीका (जाबा) लगा दो, ताकि फिर से बाहर न निकलने पाए। साथ-साथ फिटकरी के पानी के छींटे बराबर देते रहो। तुरंत फिटकरी ऽ= घोलकर पानी मे पिला दो।

(२) गोंद कनीरा ऽ। सुबह-शाम खिलाकर रसौंत २।) भर पानी ऽ२ मे घोलकर पिला दो।

(३) रूह शराब ऽ। मे कपूर २।) भर घोलकर पिला दो जब बाँम को भीतर कर दे, तो पशु के पिछले भाग को ऊँचा और अगले को नीचा कर दें, ताकि फिर न निकलने पाए।

(४) अगिया घास की जड़ पैसा - पैसा भर रोजाना तीन दिन तक प्रात जौ के आटे मे खिलाओ। फिर कभी न निकलेगी। परीक्षित है।

विषैला कीड़ा खा जाना

चूँकि यह रोग ज्वार, बाजरा, मक्का या ऊख के डंठलों द्वारा होता है, अत अँगरेजी मे इस रोग को 'कोर्नस्टाक

डिसीज' (Corn Stalk disease) कहा करते हैं।

बरसात मे पानी बरसने से मोटे डंठलोंवाले चारो मे जैसे ज्वार, बाजरा, बरु वगैरा मे एक किस्म का कीड़ा पैदा हो जाता है। पशु उसे चारे के साथ-साथ खा जाते हैं। चारे को खाते खाते ही पशु तुरंत गिर जाते हैं, और विप तमाम शरीर भर मे फैल जाता है। चलना-फिरना बंद हो जाता है। चार या छः घटे मे पशु मर जाता है।

चिकित्सा

जब पशु की यह दशा देखो, तो तुरंत उसे किसी नाले मे या ताल मे डाल दो। अगर ऐसा न कर सको, तो जितना हो सके पशु पर पानी डालो। कीचड़ को तमाम शरीर भर मे लेप दो, कीचड़ को भिगोते ही रहो।

(१) पुराने कीचड़ को १-२ नाल (ढरका) भर पशु को पिलो दो।

(२) सज्जी ऽ॥ को ऽ२ पानी मे घोलकर पिला दो।

(३) चूल्हे की लकड़ी की राख ऽ१ पानी मे घोलकर पिला दो।

सर्प-विष पर

साँप के काटने पर शरीर सुस्त, बेचैनी, कंपन और नाड़ी तेज हो जाती है। फिर धीरे-धीरे गिर जाती है और यदि उचित उपचार न हुआ, तो जानवर मर जाता है। मरने पर चीरने से काला खून और शरीर मे सूजन दिखलाई पड़ेगी।

चिकित्सा

जिस जगह साँप ने काटा हो, उसके ऊपर कड़ा बंध लगा दो।

(१) जहाँ पर काटा हो, चीड़कर खून निकालकर पुटाश भर दो।

(२) 'स्प्रिट ऑफ् एम्मोनियाँ' पिलाओ और उस जगह पर लगाओ।

(३) पाँच भाग पुटाश और ९५ भाग पानी में मिलाकर काटी जगह में भर दो।

विष खिलाना

बहुधा खाल के लोभ से या आपस मे लड़ाई-झगड़े से पशुओं को विष खिला देते हैं। मालिक को पता तक नहीं पड़ता कि पशु क्यों मर गया।

रोग की जाँच

जिस पशु को वत्स-नाभ विष खिलाया गया होगा, उसकी जीभ और ओंठों पर सूजन होगी, बेहोशी होगी, हाँफी आवेगी; मुँह मे बदबू होगी, और आँखें टेढ़ी पड़ गई होंगी।

चिकित्सा

(१) बथुआ और पलकी का रस पाव-पाव भर निकालकर पिलाओ।

(२) बकरी या गाय का दूध गर्म कर ऽ१॥ सेर पिलाओ।

(३) खट्टे मट्ठे ऽ१ सेर में २ तोले नीबू का रस मिलाकर पिला दो।

(४) दस्तों को दवा—अलसी और अंडी के तेल का जुलाब दो। ऐसी दशा में २ दिन खाना न दो, विष उतर जाएगा।

जिस पशु को संखिया का विष दिया गया होगा यह लक्षण प्रतीत होंगे:—

चिह्न

दाँत और जीभ सूखी होगी, आँखों में लालिमा खून सी होगी, मुँह में पानी न होगा, शरीर गर्म होगा; काले खून के दस्त लगेंगे, बेहोशी होगी; हाँथ और पाँव फैलाकर पशु सोता रहेगा।

उपचार

(१) अंडे की सफेदी ऽ—, मैदा ऽ। भर मे घोलकर पिला दो।

(२) गाय का दूध ऽ१ मे घी ऽ१ मिलाकर पिला दो।

(३) केले की जड़ के रस मे कपूर मिलाकर नार भरकर पिला दो।

(४) बिहिदाना का लवाब खिलाओ।

(५) श्वेत कत्था गुलाब जल मे देने से विष उतरेगा।

(६) वकरी के दूध मे घी डालकर पकाकर पिला दो।

अगर पशु को सिंघिया का विप दिया गया होगा तो—

लक्षण

बार-बार दस्त होंगे, खून पेशाव व पाखाने में आएगा; वेहोशी होगी, दाँत और जीभ नीली पड़ जायेगी।

दवा

(१) खूब गाय का दूध पिलाओ।

(२) घी ऽ१॥, एप्सम साल्ट ऽ१ मिलाकर पिलाओ।

(३) ईसवगोल के लवाव में कपूर मिलाकर पिला दो।

(४) विहिदाने को भिगोकर छानकर कपूर पीसकर मिला कर दो।

(५) गुलावजल मे कपूर पीस मिलाकर पिलाएं।

(६) तेल अलसी ऽ।—, तेल मीठा ऽ।, तेल जमालगोटा ३० बूँद, सब मिलाकर पिला दो।

रसकपूर या मदार चिकना पर

(१) बीज चमेली १०) भर फिटकरी भुनी ६ माशा, पानी ऽ१ में पकाकर ताजे दूध के साथ दो।

(२) तरबूज का पानी ऽ॥ में मुर्गी के ४ अंडे डालकर पिलाओ।

अफीम या पोस्ता के विप पर

(१) जिन्दवेशुतर २ माशा, सोंठ ७) भर शहद मे चटाओ।

(२) अंडी के कोंपल ऽ। भर घोटकर ऽ१ पानी मे पकाकर कन्दस्याह मिलाकर पिलाओ।

(३) फूल कुसुम ४) भर कालीमिर्च ४) भर वीज मूली ३) भर सव अर्क गुलाव ऽ। भर मे पिला दो।

विप धतूरा पर

(१) फूल कपास ऽ।। पकाओ और कन्दस्याह मिलाकर खिलाओ विप उतरेगा।

(२) वीज वैगन २) भर चूर्ण कर तेल सरसों ऽ।- मे दूध ऽ।= मिलाकर पिलाइये।

निल्ल

यह रोग वर्षा के पहले या जव विल्ल २-३ बार वरसात होकर रुक जाती है, और फिर वहुत दिनों तक पानी नहीं वरसता, रोग होता है। उन दिनों वरसाती चारे कुछ हरे और सूखे-से होते हैं। एक कीड़ा चारे में पैदा हो जाता है, जिन्हे पशु चरते २ खा जाते हैं।

इस कीडे को खाने से पशु जकड़ जाते हैं। हाथ-पैर नहीं हिलते। कई दिन तक पशु एक ही स्थान पर पडा रहता है।

चिकित्सा

(१) प्याज ऽ१ खिलाकर थोड़ी देर को मुँह वांध दो।

(२) सज्जी ‌‍‌‌/= पानी में घोलकर पिला दो।

(३) आक का हरा टिड्डा आटे में मिला रोटी बनाकर खिला दो।

(४) आक की हरी लकड़ी के दोनों सिरे रस्सी में बाँधकर पशु के मुँह में रखकर रस्सी सींगों से बाँध दो। लकड़ी चबाने से रोग मिट जाता है।

मस्सा या गूमरी

यह जानवरों की काँख, पेट, गले आदि स्थानों पर होते हैं। यह गेंद-सी या बड़ी छोटी प्रकार की सूजन-सी होती है। दर्द नहीं होता। गूमरी और मांस के छोटे २ ज्वार या चने के आकार के टुकड़े थनों गले, पेट मुँह आदि पर होते हैं, वह मस्से कहलाते हैं। दर्द नहीं होता।

दवा

(१) नाइट्रिक एसिड (Nitric acid) को उन स्थानों पर ४-५ लेप करने से बैठ जाते हैं।

(२) गूमरी को चिरा दो या एसिटिक एसिड (Accetic acid) या कास्टिक पोटास (Causitic Potash) से जला दो, मगर थनों पर नहीं।

थामनी या पूँछ का घाव

यह खुजली से गिर जाते हैं। बाद को धीरे २ घाव होने लगता है। पूँछ गलने लगती है, और सफेद २ पीव निकला करती है।

दवा

(१) गंधक के तेजाब को चौड़े मुँह की बोतल में डालकर पूँछ के घाववाले सिरे को बड़ी सावधानी से उसी बोतल में डाल दो। ५ मिनट बाद उसमें से निकालकर पूँछ पर कपड़ा बाँध दो।

(२) खौलते हुए कड़ुए तैल से पूँछ के घाववाले स्थान को दाग दो।

गज-चर्म

यह रोग भी त्वचा का ही है। इसको चर्मदल भी कहते हैं। इसमें चमड़ा हाथी के जैसा हो जाता है। पहले पहल थोड़े शरीर में होता है। बाद को सारे शरीर भर में हो जाता है। मछली के सिकुनों कैसा सारे शरीर से निकलने लगता है। यह एक प्रकार का कुष्ट है।

चिकित्सा

(१) कच्छू राक्षस तैल या महामरिचादि तैल मलो।

(२) सूखे आँवले पानी मे पीसकर चुपड़ने से लाभ-होता है।

(३) आम की फाँकों का चूर्ण और उसी में थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर ताँबे के बर्तन में रखकर रगड़ो, बाद को शरीर भर में मलो। १ मास ऐसा करने से सब त्वचा रोग नष्ट होंगे।

नोट—कच्छूराक्षस तथा महामरिचादि-तैलों के नुस्खे पृथक् देखिए।

खौरा-रोग

शरीर-भर में चट्टे से पड़ जाते हैं। खुजली भी होती है। यह एक प्रकार की खुजली ही है। खाल खराब हो जाती है। काले गाय-बैल को बड़ा कष्ट होता है। शरीर दुर्बल हो जाता है।

चिकित्सा

(१) कच्छू राक्षस तेल की खूब मालिश करो।

(२) कलकतिया तंबाकू के पत्तों को २४ घंटे पानी में भिगो दो। बाद को एक ठीकरे से चट्टों को खूब खुजला कर उसी पानी को लगाओ। ८-१० दिन ऐसा करने से लाभ हो जाता है।

त्रिमदग रोग (१)

दस्त पतले, पानी-से होते हैं। गोबर फुटकीदार होता है, और बड़ी बुरी गंध आती है। पशु दिनोंदिन दुर्बल होता जाता है। रोग बड़ा खतरनाक होता है।

चिकित्सा

(१) बिसहरा के ‍ऽ= पत्तों को पीसकर नार भरकर नित्य सात दिन प्रातः पिलाने से लाभ होता है।

नोट—बिसहरा एक प्रकार की जंगली बेल है। इसके पत्ते पलास-जैसे होते हैं, और बड़ी बेल चलती है।

विसहरा रोग (२)

इसमें भी पतले, फुटकीदार दुर्गन्धित दस्त तो होते हैं, मगर पशु थरथराता और काँपता है। चारा-पानी खाना पीना छूट जाता है। दवा करने पर भी १०० में से ६० पशु मर ही जाते हैं। मुँह सूख जाता है।

चिकित्सा

(१) बीज सोया, अजवाइन, काली सरसों, राई, जवाखार, सैंधव, पकी इमली, हल्दी—सब सम भाग लो, पीसकर गुनगुनीकर मुँह पर लेप कर दो। ऊपर से कपड़ा बाँधकर तीन दिन ऐसा ही करो।

(२) बाँबी की नई मिट्टी लाकर उसे पानी डालकर खूब पीस लो, और सानकर उसकी गोल गुरिया बना लो, और उन्हें सन की रस्सी में पुहाकर, माला बनाकर पशु को पिन्हा दो, रोग में आराम पहुँचेगा।

मन्दाग्नि पर

भूख नहीं लगती, शरीर दुबला-पतला हो जाता है; काम करने की ताकत भी कम हो जाती है।

दवा

(१) कुम्भी के पौधे को ऽ। लेकर खूब महीन पीस लो और उसे जौ के आटे मे मिलाकर खिला दो। इसी प्रकार आठ दिन करने से भूख बढ़ेगी।

(२) हल्दी ऽ१। साँभर नमक ऽ१। गोस कटैया समूल खुश्क ऽ१। गूगल ऽ= गुड़ ऽ५ कारीजीरी ऽ। सब दवायें पीस कूटकर रख लो, और ऽ।= का एक लड्डू नित्य प्रातः खिलाओ। ऐसा करने से भूख बढ़ती है, शरीर सबल होता है, और बैल, भैंसे रास्ता चलने मे थकते नहीं। मसाला बड़ा उत्तम, क्षुधा-वर्धक है। परीक्षित है।

(३) मट्ठा ।ऽ५, प्याज ।ऽ, गेहूँ का आटा ऽ५, नमक खारी ऽ५ सबको मिलाकर एक मटका मे भरकर उसका मुँह बन्द कर रख लो, और आठवें दिन उसे जानवर को पिलाओ। इस दवा से पशु तैयार होता है, और खूब भूख लगती है। खूबी की बात तो यह है कि इस पशु के पास मक्खी व डाँस नहीं आते। जिन सज्जनों को शंका हो एक बार अवश्य परीक्षा कर देखें, फिर लेखक को कृपया अपना अनुभव लिखें। बड़ी कृपा होगी।

घमहाँ पशु

इस जानवर को धूप ज्यादा सताती है, पशु फौरन पानी में लोट जाता है, जल से बाहर निकलने को जी नहीं चाहता।

ऐसे जानवर की पहिचान यह भी है कि ज्यादातर रोम फटे-से हुआ करते हैं। जहाँ तक हो सके, बैल, भैंसे ऐसे कभी न लेना चाहिए।

दवा

(१) नित्य प्रातः ऽ॥ सर्षप तैल ४० दिन तक पिलाइए, अवश्य यह शिकायत मिट जायगी।

पैरों में रसबादी उतरै

बादी से पैर की गोठों मे सूजन आ जाती है। पशु को चलने मे तक़लीफ़ होती है।

चिकित्सा

(१) गोठों पर + इस प्रकार का दाग़ करा दो।

(२) निर्गुंडी, भाँग, अजवाइन, पलास बीज, वायबिरंग, सहजन जड़ की छाल, सेंधा नमक, सोंचर नमक—सब बराबर-बराबर लो, चूर्ण कर रख छोड़ो। नित्य प्रति २ तोले चूर्ण मे २ तोले घृत मिलाकर १ मास तक पशु को खिलाइए, रोग दूर होगा।

दागे घाव पर

बहुत से रोगों मे पशुओं को लोहे की सलाखों या और किन्हीं चीजों को आग मे लाल तपाकर दाग देते हैं। दागे स्थान पर घाव हो जाया करते हैं। उनकी दवा यह करो—

मलहम

(१) तेल तिल्ली ऽ।, नौसादर ऽ–, सुहागा ऽ– तीनों को आग पर खूब पकाओ, घोटकर रख लो, घाव पर लगाओ, लाभप्रद है।

(२) सफेद तिल का तैल ऽ। लो, उसमें १५ अदद मिलावाँ को ले उनके दो-दो टुकडे कर उसी तैल में डाल आग पर खूब पकाओ बाद को भिलावाँ निकालकर फेंक दो और फिर गंधक नौनियासार टका-भर, तूतिया १ तोले पीसकर, उसी तैल में डालकर फिर पकाओ। बाद को उतारकर रख लो, और इस्तेमाल करो दिन में कई बार घाव पर लगाया करो, शीघ्र लाभ होगा।

जलने पर

पशु अगर किसी प्रकार से आग में जल जाय, तो तुरन्त उसका उपचार करो।

दवा

(१) प्याज का रस जले पर लगाइये।

(२) खाने के चूने का पानी और अलसी का तैल दोनों आपस में खूब फेंटकर शरीर भर में पोत दो, अवश्य लाभ होगा, परीक्षित है।

(३) केले की पेड़ की जड़ पीसकर लगाने से आराम होगा, छाले न निकलेंगे।

(४) तैल नारियल और थोड़ा चूना खूब मिलाकर जले स्थान पर लगा दो।

बेलिया

हलक के नीचे गेंद समान होता है। ऊपर से टटोलने मे गोलाकार गेंद-सा लगता है। कभी कभी हलक के एक तरफ़ होता देखा गया है, और कभी कभी दोनों तरफ़।

चिकित्सा

(१) नीम की पत्ती को पानी मे उबाल कर उसी का बफारा दो, उसी पानी की धार डालो।

(२) लोहे की सलाका से + इस प्रकार दाग दो। अगर दागने से लाभ न हो, तो पकाकर फोड़ दो।

(३) कालाजीरी, मेथी, सोया तीनों सम भाग लो, महीन पीस लो, गुनगुना लेप करो। पककर बेलिया फूट जायगा।

घुमना रोग

इस रोग में पशु घूमता रहता है, और घूम घूम कर रह जाता है। चारा-पानी छूट जाता है। कुछ दिन बाद मर जाता है।

दवा

(१) गाय का दूध ऽ१। ले, उसी मे हल्दी ऽ— डालकर इस को एक ख़ूराक प्रातः और इतनी ही शाम को ७ दिन पिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

(२) अगर किसी स्थान पर सूजन हो, तो फ़ौरन् उसी जगह पर दाग देना चाहिए; आराम मिलेगा।

लियाँ या मनया फूटना

बुन्देलखंड मे इसे लियाँ फूटना कहते हैं। मगर कहीं-कहीं पर मनियाँ फूटना भी कहते हैं। यह ज्यादातर बैलों के होता है। इस रोग मे खाल के नीचे पतले-पतले सफेद सूत - से कीड़े पड़ जाते हैं। अगर इन्हे पकड़कर निकालें तो हाथ-हाथ भर तक के लंबे निकलते हैं। जब वह बाहर छेद कर देते हैं, तो खून बहने लगता है। वृपभ दिन २ दुबला होता जाता है। जानवर कम खाता-पीता है और सुस्त सा रहा करता है।

चिकित्सा

(१) दिन भर मे चार छः बार प्याज खिलाओ। इसे एक मास तक खिलाते रहो। दिन-भर मे कम से कम चार पाँच सेर प्याज अवश्य खिला देना चाहिए। सब शरीर भर मे जब प्याज के रस का असर हो जाएगा ; तो कीड़े खुद ब खुद मर जायँगे।

(२) सुजयत्त चिड़िया को पंख समेत जौ के आटे में लपेटकर पिंड बनाकर खिला दो, लाभ होगा।

(३) सोमवार को अगर काला झींगुर खिला दिया जाए, तो बड़ा हितकर है।

(४) मैनसिल ४ रत्ती गेहूँ के आटे में मिलाकर १ हफ्ता दो बाद को गंधक आँवलासार १ तोला, सुरमा ६ माशा

१ हफ्ते दो, फिर संखिया १ हफ्ता दो। जख्म धोकर चूना, हल्दी मिलाकर लगाओ।

(५) अगर काले साँप को केंचुल १) भर गुड़ में लपेट-कर भौमवार के दिन खिला दिया, जाय तो रोग चला जाय।

ओदी रोग

इसे कहीं-कहीं वोदी रोग भी कहते हैं। ज्यादातर यह गाय-भैंस के बच्चों को होता है। इस रोग में उनके सारे शरीर भर के बाल झड़ जाते हैं और लाल-लाल भीतर की त्वचा निकल आती है।

चिकित्सा

(१) भढारि के पत्तों को पीसकर उबालें, और उसी पानी से नहलायें।

(२) मंगल या रविवार के दिन ब्राह्मण की कन्या से चिकनी मिट्टी लगवा दें।

(३) नीम के पत्तों के पानी से नहलवाता रहे, लाभ होगा।

तूल रोग

यह रोग भी गाय-भैंस के बच्चों को हुआ करता है। इस रोग मे बच्चे बेहोश हो जाते हैं। जमीन पर गिर जाते हैं। चारों पैर फैला देते हैं अगर पकड़-पकड़कर बच्चों को खड़ा भी करो तो भी वह धरती पर पैर नहीं धरते। ४-६ घटों मे वह

चिकित्सा

(१) सर्षप का तैल एक छटांक नार में भरकर पिला दो।

(२) नथुनों पर जहाँ चिकनाई-सी होती है वहाँ पर दाग दो।

फीलपाँव

इसे गजचरण रोग कहते हैं। पैर सूजकर भारी हो जाता है। दर्द नहीं होता मगर चलते फिरते नहीं बनता। किसी किसी पशु के तो एक ही पैर मे और किसी-किसी के चारों पैरों मे होता है। रोग बादी से होता है। यह रोग मनुष्यों को भी और खासकर पूरब के जिलों के लोगों को बहुतायत से होता है।

चिकित्सा

(१) कच्ची फिटकरी को पीसकर माखन केसाथ खिलाओ

(२) पटोल की जड़, नीम के पत्ते, छोटी हर्र सब सम भाग लेकर ✓। भर घी में मिलाकर खिलाओ।

(३) अजवाइन, सेंधा नमक ; सोंठ, पीपर, वायविरंग सब तोले-तोले लो और दूने गुड़ में सानकर खिलाओ। इसी प्रकार इस दवा का सेवन २ माह करो।

(४) नश्तर लगाकर पीब निकलवाकर ऊपर से वह मरहम चुपड़ा करो ; अवश्य लाभ होगा।

खजूर के फलों को ५- ले दो दिन तक जल में भिगो दो, बाद को मलकर पानी छान लो। फिर सज्जीखार ०) भर जवाखार ०) भर उसी मे डालो। यह दवा १ माह तक लगाओ।

(५) तिल के तेल मे गंधक को पीसकर लगाने से भी यह रोग नाश होता है। यह रोग बड़ा बुरा है, दवा करने में देर न करना चाहिए नहीं तो अच्छा देर से होगा।

अण्डकोश की सूजन

यह सूजन खासकर चार प्रकार से हुआ करती है (१) वधिया कराने से, (२) बादी से और (३) गर्मी से और (४) चोट के लगने से।

अब यदि पहले कारण से सूजन हुई है तो कोई मुजायका नहीं, अपने आप अच्छा हो जायगा। अब अगर सूजन के कारण बादी, गर्मी और चोट से हैं तो दवा करना लाजिमी है।

चिकित्सा

अगर सूजन गर्मी की हो तो—

(१) मुलतानी मिट्टी को ठंडे पानी मे पीसकर अंडकोशों पर लेप कर दो लाभ अवश्य होगा।

अगर सर्दी बादी से सूजन हो तो—

(१) काराजीरी, गेरू, अजवाइन सम भाग जल मे पीस लो, गर्म करके ७ दिन तक लेप करो। परीक्षित है।

(२) काले तिल पानी में पोसकर गर्म करो और लेप कर दो।

(३) दालचीनी और गुड़ सम भाग ले पानी मे पीस गर्म कर लेप करो।

(४) गेंदा की पत्ती की वाफ का वफारा दो।

(५) काली मिर्च १) भर पीसकर लेप करो। परीक्षित है।

(६) जवाखार १) भर गेरू १) भर सोंठ १) भर पीपर १) भर सबको खरल करो और ऽ= मदिरा में पिला दो।

(७) सेंहजन की छाल ऽ= अंडी की जड़ की छाल ऽ= सोंठ ऽ= मैदा ऽ॥= कटैया गोल मय मूल के ऽ= सब दवायें कूट छानकर रख लो। बाद को उसी चूर्ण में मैदा भी मिला दो। नित्य उसी चूर्ण को ऽ- घृत में मिलाकर १० दिन प्रातः तक खिलाइए, अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(८) टेसू के फूल थोड़े नमक के पानी मे पकाकर बाँधो और अंदर कपूर ७ मा०, कलमीशोरा १ तो० शराब ऽ- को ऽ॥ पानी मे दो बार दो।

प्रमेह

इसे 'कामीला रोग'' और "भरीला रोग" भी कहते हैं। मनुष्यों को जैसा प्रमेह वैसा ही पशुओं को भी यह रोग होता है। रोग बड़ा भयंकर और कष्टसाध्य है, यदि चिकित्सा यथा समय की गई, तो यह रोग भैंस और बैलों को होता है।

इस रोग में पशु की लिंगेन्द्रिय से सदैव वीर्यपात हुआ करता है। शरीर दुर्बल हो जाता है। शरीर की ताकत कम हो जाती है।

चिकित्सा

(१) छाल सेमर, छाल बबूल, झरबेरी की जड़, सब सम भाग लो; कूट-पीसकर चूर्ण करो और नित्य २) भर जौ के आटे में रख पिंड बनाकर खिलाया करो।

(२) बबूल की मुलायम फली ꠳॥ चने के आटे में खिलाओ।

(३) बीज मूली, सौंफ, जीरा श्वेत, सब एक-एक तोले लो और जौ के आटे मे पिंड बनाकर ७ दिन खिलाओ।

(४) कतीरा, केला-जड़, श्वेत खैर १-१ तोले आटे के साथ खिला दो।

(५) फल बबूल, बेरी, अनार और बबूल की पत्ती २-२ तोला पीसकर दो। कम-से-कम १० दिन इसे पिलाओ, लाभ होगा, परीक्षित है।

(६) पीपर, लाख, श्वेत कत्था, कतीरा दो-दो तोले जीरा श्वेत ५) भर सबको चूर्ण कर लो, साठी के चावल आध सेर गाय के दूध में डाल दो उसी मे उपर्युक्त सब दवाओं का चूर्ण डाल कर खीर पका लो। नित्य प्रात· २१ दिन तक पशु को खिलाओ। अवश्य सब व्याधि दूर होगी। परीक्षित है

कंठमाला

गरदन में तमाम गिल्टियाँ पड जाती हैं। वह पकती फूटती हैं। जिसमें से पीब बहा करती है। इसी को कोई-कोई गंडमाला के नाम से पुकारते हैं। रोग बड़ा भयंकर होता है।

चिकित्सा

(१) कुत्ते की खोपड़ी को गले में बाँधने से लाभ होता है।

(२) चरखे में एक लोहे की डंडी लगी होती है, उसे ले आग में खूब तपाए और जिस तरफ उस में घुंडी होती है उसी तरफ से गिल्टियों पर दागता चला जाये। एक भी गिल्टी बिना दगी न रहे। बाद को दुमुहाँ साँप को एक मिट्टी के बर्तन में बन्द कर ४० दिन तक जमीन में गाड़ दो। बाद को ४१वें दिन निकालो, उसे साफ करो और उस की हड्डियों की माला गले में बाँध दो, लाभ होता है।

पनियारी

मुँह नीचे रहता है। गरदन दाटी तक लग जाती है। मूत्र अधिक सूज जाता है। चारा पानी नहीं खाता।

चिकित्सा

(१) लोहा गर्म करके दाग दो।

(२) बकरे के दिमाग का भेजा और पत्थर का चूना दोनों को खूब पीस कर लुगदा करो। या तो दब ही जायगा, या फूटकर बह जायगा।

(२) काले तिलों को जलाकर पानी में पीसकर लगाओ।

(३) झिंगवा-मछली को लेकर उसे पानी मे खूब महीन पीसकर बदखुरी पर लेप करो, रोग दूर होगा।

घेंघा

इसे 'हाऊ' भी कहते हैं। यह रोग ज्यादातर तराईवाले जानवरों के होता है। यह रोग नदी किनारे की मटीली घास के चरने से होता है। गले के नीचे थैली-सी लटक आया करती है। दस्त बहुत लगते हैं, और पशु दिनोंदिन दुबला होता जाता है।

चिकित्सा

(१) काले धतूरे के पत्ते, मकोय के पत्ते व जड़, कारजीरा सबको जल में पीसकर गर्म कर, घाव पर लगाएँ।

(२) अजवाइन को सिरका में पीसकर ऽ– शाम-सुबह लगावे।

(३) मूली के बीज और कलमी शोरा जल में पीसकर धोओ।

(४) कुटकी, कारजीरी, सोंचर, तीनों टका-टका भर आठ दिन तक खिलाओ।

(५) नीम के पत्ते, बकैन के पत्ते और सँभालू के पत्ते सब सम भाग लेकर एक बर्तन में डाल पानी भर आग पर

पकावे और उसी का बफारा दे। बाद को जब ठंठा हो जाय तो बाँध दे।

(६) ऊँख के रस को चुपड़ दे। इससे मक्खियाँ बहुत लपटेंगी, जो सूजन को चाट लेगी।

कठ-दुख

इसमें कान की जड़ से सूजन होती है, और हलक तक चली जाती है। चारा-पानी नहीं खाता। शरीर दुर्बल हो जाता है।

दवा

(१) पकी ईंट को गर्म कराकर सेंक करावे।

(२) जहाँ सूजन हो, लोहे के बड़े गोल छलने से दगा दो।

(३) इंद्रायन का एक फल भुलभुलाकर जो के आटे में रख कर खिला दो।

(४) सोंठ, मिर्च, काराजीरी १॥-१॥ तोले, लहसुन)= सब को पीसकर आटे मे पिंड बनाकर खिला दो।

(५) नीम के पत्ते, नीम की छाल, अमलतास का गूदा सबको पानी मे बारीक पीसकर गर्म-गर्म लेप करो।

कुम्हेडी

इस रोग में दोनों सीगों के बीच का मांस गल-गलकर गिरने लगता है, और बाद को सींग भी गिर जाते हैं। पहले नथुनों

से पानी बहने लगता है। सींगों की जड़ गलने लगती है, सींग टेढ़े होकर माथे पर लटक आते हैं, मस्तक की हड्डी सड़ने लगती है, पानी मिला खून बहता रहता है, धीरे-धीरे मस्तक गल जाता है, और तीन-चार माह मे पशु मर जाया करता है।

जब इस रोग के होने की किंचितमात्र भी संभावना प्रतीत हो, तो तुरत ही इसका उपचार आरंभ कर देना चाहिये। अगर हो सके, तो अस्पताल मवेशियान मे ले जाकर भर्ती कर देना चाहिए। वहाँ पर सरकार की तरफ से एक पशु-चिकित्सक रहता है, जिसका काम जानवरों की दवा मुफ्त करना ही है।

झिटका, चोट, मोच

अगर जानवर के किसी भी अंग मे किसी कारण से झिटका, चोट व मोच आ गई हो तो तुरंत नीचे लिखी दवा करो, लाभ होगा।

दवा

मुर्गी के अंडे १३ नग, अफीम १ तो०, चर्बी सुअर ऽ॥, सर्षप तेल ऽ।, चूर्ण आंवा हल्दी ऽ=, गेरू चूर्ण ऽ- इन सब चीजों को खूब घोटकर रख लो, और रोजाना शाम-सुबह १५ दिन खूब रगड़-रगड़कर मालिश करो, बाद को भेड़ के कंडों से सेंक किया करो, अवश्य लाभ होगा।

(२) सोडा और नौसादर तारपीन के तेल में मिलाकर मालिश करो।

(३) ताजा गोबर गर्म करके लगाने से भी लाभ होता है।

घाव पर बाल जमें

(१) लील की वट्टी को मनुष्य के थूँक में पीसकर एक गाह लगाओ।

(२) काले तिल की भस्म को पानी मे पीसकर लगाओ।

(३) साबुन और लीलबरी को पानी मे पीसकर लगाओ।

(४) मुर्गी के ६ अंडों को पानी मे पकाओ, बाद को उन्हे तोड़ लो और उनकी जर्दी निकाल लो। आग पर कड़ाही को रख दो, जब वह गर्म हो जायँ तो उसमे वह जर्दी अडों की डाल दो। जर्दी तेल छोड़ेगी। उसी को निकालकर रख लो, और नित्य गूद पर लगाओ, कुछ काल पश्चात् बाल अवश्य जमेंगे, परीक्षित है।

पूँछ में बाल जमें

अगर पशु की पूँछ की बालरी कटकर गिर गई हो तो उसमे फिर से बाल जम सकते हैं, मगर यह तेल लगाओ।

तेल

(१) बरंगवा मछली को सर्षप तेल मे खूब जलाओ, बाद

को उसीको में घोटो। तेल तैयार है। इसकी एक मास तक मालिश करो, बाल जम आएँगे।

जख़्म-कंधा

अगर कंधे पर घाव हो गया हो, वह पकताफूटता हो, और पानी बहा करता हो, तो यह मलहम लाभप्रद होगा।

दवा

(१) संगजरान, मौम, सफेदा सब टका-टकाभर लो, और महीन पीस लो। बाद को पुरानी बनात जूते का चमड़ा और गाय के गोबर के बिनवा कंडे, तीनों की भस्म ऽ– लो, फिर तेल अलसी ऽ।= ले आग पर पकाओ और उसी में सब चीजें मिला दो, और खूब घोटो। मलहम तैयार है। इसे कंधे पर जब तक घाव न मिटे, बराबर लगाते रहो।

कंधे पर बाल जमें

कंधे के घाव होने के बाद उस जगह कभी-कभी बाल नहीं जमा करते। ऐसी हालत में कंधा देखने मे बदसूरत मालूम होता है। नीचे-लिखे तेलों में से किसी का भी प्रयोग करने से बाल अवश्य जमने लगेंगे।

तेल

(१) घोंघा के दाँतों को निकालकर उन्हें सरसों तेल

डालकर भस्म करो, और बाद उनके जल जाने के उन्हे उसी तेल मे घेप लो। मलहम-सा हो जायगा, इस्तेमाल करो।

(२) सेंहुडा की मुलायम शाख हाथ भर लो और उसका वकला व कांटा छीलकर छोटे छोटे टुकडे काट लो बाद को सर्पप तैल मे डाल जला लो बाद को घेपकर घाव पर लगाओ। अवश्य वाल जमेंगे।

कंधे में झटका लगने पर

अक्सर गाडी वगैरा खींचते समय बैल या भैंसो के कंधों में झटका लग जाता है। जिससे उन्हे बहुत कष्ट होता है और चलने से हीला हवाला करने लगते हैं।

दवा

(१) मुर्गी के अंडों मे नमक मिलाकर कधे पर नित्य दुवारा तीन-चार दिन तक मालिश करो, लाभ होगा।

(२) रेंडी का तैल गर्म कर लो और उसी की कंधे पर नीम गर्म मालिश करो लाभ होगा।

(३) जगंली सुअर की चर्वी लो उसे गुन गुनी करके मालिश करने से अवश्य लाभ होता है।

कंधा आ जाने पर

जो पशु एकदम गाड़ी, रथ या हल वगैरा मे जोत दिए जाते हैं उनके अक्सर कंधे सूज जाते हैं। कभी-कभी तो पकते और

फूटते हैं। जख्म हो जाया करते हैं। ऐसी हालत में जानवर को जोतना न चाहिए।

दवा

(१) भैंसे के गोबर को पानी में पका कर लगाओ।

(२) ऊँट की लेंड़ी और खारी नमक पानी मे पीस कर लेप करो।

(३) सुअर की चर्बी मलो।

(४) गोह की चर्बी की मालिश करो।

(५) चने का आटा आंबा हल्दी और गेहूँ का मैदा तीनों बराबर लो और दूध मे घोलकर आग पर औंटा लो और कंधे पर लेप करो।

चोट की सूजन पर

किसी अग मे चोट वगैरा लगने से सूजन अक्सर हो जाया करती है। ऐसी दशा में तुरन्त उपचार करो।

दवा

(१) हल्दी ॥ भर माजुन १) भर दोनों को महीन पीसकर पानी डाल आग में पकाओ और सुहाता-सुहाता गर्म लेप करो।

(२) लोना मिट्टी लेकर पानी में खूब औंटो और गुनगुना चोट के स्थान पर लेप करो।

(३) अगर सूजन मिटती ही न हो तो उस जगह के बाल मुड़ा कर जोंक लगवा दो।

सर्दी की सूजन पर

(१) गेरू और अजवाइन दोनों सम भाग ले पानी में महीन पीस गर्म करो और नीम गर्म लेप करो।

(२) गेरू और कारीजीरी दोनों बराबर लो और पानी के साथ पीसकर, गर्मकर गुनगुना लेप करो।

(३) अंबरबेल, मकोय और सँभालू तीनों के पत्तों को पानी में पीसकर गर्म कर नित्य प्रात. गुनगुना गुनगुना लेप करो।

गरमी की सूजन पर

(१) गेरू, धनिया और ईसबगोल सम भाग लो और उसी में जौ का आटा मिला सब बारीक पीस लो फिर उसमें सिरका मिलाकर पका लो और नीम गर्म लेप करो।

लादने से पीठ या छाती सूजे पर

भैसों या बैलों की पीठ पर बोझ लादने से कभी कभी पीठ या छाती सूज जाया करती है। इस दशा में लादना बंद करके दवा करना जरूरी है।

दवा

(१) गाय के दूध में थोड़ा नमक डालकर गर्म करो,

गुना गुनगुना ही ले कम्बल के टुकड़े में भिगोकर सूजे स्थान पर धरो। नित्य प्रात: तीन दिन ऐसा करने से सूजन मिटेगी।

(२) मुसब्बर ∫– लेकर पानी में पीस लो फिर उसे गर्म कर सूजे स्थान पर लेप करो। दवा कम या वेश सूजन के मुताबिक ले सकते हो।

(३) जहाँ पर सूजन हो वहाँ पर कपड़े को पानी में भिगो कर रख दो और बराबर उसे पानी से तर ही करते रहो जब तक सूजन न मिट जाए।

तालू

इसे गरवा व पट्टा भी कहते हैं। जीभ के तले काले काले रंग की एक रग हो जाती है। इसमें पशु चारा नहीं खा पाता। मुँह चिपिर चिपरि करता है। बारबार जीभ निकालता और नथुनों को चाटता है मगर जीभ नाक तक नहीं पहुँचती।

दवा

(१) रग को कांटा या चाकू से चीड़कर रक्त निकाल दो और फिर बाद को हल्दी और भड़भूजे के छप्पर का जाला ले दोनों का महीन महीन पीस कर उस चिरे हुये स्थान पर दिन में २-३ बार मलने से लाभ होगा। परीक्षित है।

थकावट

अक्सर बहुत चलने से जानवर हँफाने लगते हैं जमीन

पर पैर रखने से बड़ी तकलीफ महसूस होती है। ऐसी हालत में फौरन जानवर का चलना रोककर उसका इलाज करना लाजिमी है।

दवा

(१) नरकचूर ऽ। आँबाहल्दी ऽ। गूगल ऽ– सबको पीस लो और मिलाकर रखलो। बादको गाय का घी और शीरा दोनो पाव-पाव घीक्वार का गूदा ऽ१ इन तीनों को पतीली मे डाल आग पर पकाए और इसी मे ऽ– भर ऊपर के चूर्ण से लेकर डाल दे। पकने पर यह औटी पशु को शाम के समय पिला दो। ज्यादा से ज्यादा सात दिन यह दवा करो अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है कई बार का।

(२) चूना खाने का ऽ– हल्दी ऽ– शीरा ऽ१ सबकी औटी शाम को पिलाओ। चलने की सूजन वगैरा व थकावट सब जाती रहेगी।

(३) चौकिया सुहागा सेंदुर मालकागनी १-१ तोले सब को पीस छान लो फिर सबको गाय के घी मे डालकर भून लो और उसी मे गुड पुराना ऽ– मिला दो। ठंडा कर सब की ५ गोलियाँ बना लो और नित्य प्रात. एक गोली खिलाने से शीघ्र ही लाभ होगा। यह सेंदुरफ वटी का नुस्खा है। बड़ा सस्ता मगर अपूर्व है।

(४) चार ईंटो को लो और आग जला कर उन्हें उसी

मे डाल दो। जब वे लोहे सी लाल हो जाए तो उन्हे निकालकर पशु के पैरों तले रख दो और ऊपर से खूब खट्टा मट्ठा धीरे-धीरे उन्ही ईंटो पर डालते रहो। जब वे ईंटे फिर ठंढी हो जाएं तो उन्हे फिर आग मे डाल दो और दूसरी जो आग मे हो उन्हें निकाल कर पुनः वैसा ही करो। दो तीन बार दिन में ऐसा करने से ५-६ दिन में अवश्य पूर्ण लाभ हो जाएगा। यह बफारा बड़ा उपयोगी है।

सुई खा जाने पर

दुश्मनी मे सुइयाँ आटे मे रखकर खिला दी जाती हैं। वह आँतों में चुभने लगती हैं। पशु बेचैन, उदास रहने लगता है। आँखों से आँसू आते हैं। पेट मे दर्द रहता है। खाना पानी नहीं खाया जाता। शरीर दुबला हो जाता है। कुछ दिन बाद पशु मर जाता है।

चिकित्सा

(१) चुंबक पत्थर ?) भर ले महीन पीस लो और गुलाब-जल में घोट कर पिला दो। ३-४ घंटे मे अन्डी का तेल ५॥ और गोंदरस ५२॥ मिला लो और थोड़ा थोड़ा पिलाओ।

सुजरा

पशु शरीर सूज जाता है। नाक कान और थनों मे खुर-खुर करती है।

चिकित्सा

(१) गेहू ऽ= नीम के पत्ते ऽ१ दोनो को पीस कर छान लो और पिलादो वाद को इसी दवा को गर्म कर मालिश करो।

(२) गोघृत ऽ= गर्म करो और उसी मे साबुन ऽ- पका लो ठंढा करके पिला दो। ऐसा ५-७ दिन करो।

(३) वठिया के कंढ़ो की रूनी ऽ। पीसकर ऽ१ भर औटाये पानी में डालकर ठंढा कर पिला दो। ३ दिन ऐसा करो।

महुआ बीसी

भौहे सूज जाती हैं। कानो तक सूजन होती है। सारा शरीर थलथला जाता है।

चिकित्सा

(१) महुआ ऽ१ पीस उसी मे गुड ऽ। भर मिला लो और फिर मट्ठा ऽ४ मिलाकर ४-५ दिन पिलाओ। यह एक खूराक है। ऐसा करने से रोग अवश्य अच्छा होगा।

बहता रोग

यह रोग भी जबान मे ही होता है। सारी जबान सूज जाती है। मुँह से राल बहा करती है। आँखो से पानी बहता है। बड़ा कष्ट होता है। खाना-पीना बंद हो जाता है।

दवा

(१) जबान के नीचे ४ रगे है, उनकी फस्त खुला दो।

मुखबन्द रोग

मुख के दोनों तरफ बड़े कड़े कड़े कल्ले हो जाते है। दाँत बैठे से मालूम पड़ते हैं। मुँह से झाग बहुत गिरता है। मुँह नहीं खोलता और न कुछ खाना पीना खाता है। पेट पिचका सा दिखाई पड़ने लगता है।

दवा

(१) सरसों तेल एक नार भर पिलादो और उसी को गर्म-गर्म कल्लों पर मलो।

(२) गाय का गोबर और अंडी के पत्तों को महीन पीस कर गर्म करो और गुनगुना गुनगुना कल्लों पर लेप करो।

(३) अगर लाभ न हो तो लोहे को गर्म कर दगवा दो।

अवाल रोग

मुँह में काँटे हो जाते हैं। पशु चिपचिप करता है मगर खाना नहीं खाता। तालू में जो काँटे होते हैं वही बढ़ जाते हैं पशु दुर्बल हो जाते हैं।

दवा

(१) रविवार को या सोमवार को चमार से काँटों को कटवा दो तब और ऊपर से हल्दी और नमक सम भाग ले महीन पीस कर ३।४ दिन लगाओ अवश्य लाभ होगा, कई बार का परीक्षित।

अनछरा रोग

पशु की जबान पर छोटे छोटे नुकीले दाने मे पड जाते है। खाना पीना दुर्लभ सा हो जाता है। पशु खाने की इच्छा करता है मगर दाने गडने के कारण खा नही पाता।

दवा

(१) धौ की जड़, फूल और छाल व पत्ती लो पानी मे पकाओ जब पानी आधा रहे तो उसे दानो पर लगायं।

(२) पहिले धौके फूल पानी मे भिगो दो बाद को फिर उन्हें उसी जल मे मलो और सेंधा नमक, रसौत, कलमीशोरा और समुद्र फेंन सब सम भाग ले बाँटकर उसी जल मे डाल उसे दानो पर मलो अवश्य रोग मिटेगा परीक्षित है।

मेझुकी रोग

इसे फारसी मे 'अलाई' कहते हैं। पशुओ की जबान के ऊपर मूज जाता है। बड़ी मुश्किल से चारा खाने पाता है मगर घुर-घुर शब्द करता है।

दवा

(१) रविवार को तेल निकालने की लोहे की परी तप्त कर मेझुकी पर दागे तो लाभ होता है।

(२) कपास की लकडी जला ७ बार रविवार के दिन मेझुकी पर छुआने से लाभ होता है।

(३) घरूजतिया साँप का चूर्ण १) भर ले उसी मे हल्दी ५- मिलाकर ४-५ दिन खिलाने से लाभ होता है।

(४) मेला बगुली चिड़िया के पंखे उखाड़कर मांस खिलादो और उसी की हड्डी को पीसकर मेफ़ुकी पर चुपड़ो तो लाभ होगा।

(५) एक मेफ़ुकी रोजाना ३ दिन तक खिलाओ तो मेफ़ुकी-रोग नष्ट होगा।

परिहुल

इस रोग में मसूड़े सूज जाया करते हैं। पशु को खाने में बड़ा कष्ट होता है।

दवा

(१) मेथी, साँभर, अलसी सब सम भाग लो महीन पीसकर सूजन पर मालिश करो।

अगर वरम पकता मालूम पड़े तो नश्तर से चीर दो और यह दवा लगाओः—

(२) हल्दी और साँभर नमक उसी पर मलो।

(३) सोंठ, पान और मिर्च समभाग ले, पीस लो और ३ दिन दो।

चुप्पा रोग

यह रोग दांतों अंटों पर जहाँ दांत होते हैं खाल के अंदर मांस बढ़ आता है। बाद को पक भी जाता है जिससे चारा नहीं खाते बनता।

दवा

(१) चीर कर गदूद निकाल दो फिर यह दवा लगाओ। हल्दी और नमक सम भाग बाँट कर मलो।

(२) कोयला और हल्दी सम भाग ले महीन कर घाव में भर दो।

तारू रोग

दाँतो की जड़ो से लेकर तारू भर फूल जाता है। कभी-कभी तो तालू पर छाले भी पड़ जाया करते है। चारा नहीं खाने पाता।

दवा

(१) बीज सोया २) भर अजवाइन २) भर ले ऽ।। सेर पान मे पका लो और ठढा कर नारभर पिला दो। ऐसा दोनो समय ४ दिन करो।

शूल

यह रोग पेट मे होता है। पेट मे बहुत दर्द होता है। पशु बेचैनी से बार-बार उठता बैठता है और अपने पेट की ओर देखता है। इधर - उधर करवटे लेता है। खाना - पानी नहीं खाता पीता। गोबर मे बदबू आती है। जिस पशु के इतनी बातें देखो फौरन् शूल समझ लो।

चिकित्सा

(१) कंजा का गूदा और सूखी तंबाकू समभाग ले मुँह मे रखकर खिला दो।

(२) सोंठ २॥ तोला गुड ऽ- हींग ४ माशा की गोली बना लो और दिन मे कई बार गोली खिलाओ, लाभ होगा।

(३) पीने की तंबाकू, गुड़ पका लो और नार भर कर पिला दो, अवश्य लाभ होगा।

(४) पीने की तंबाकू को हुक्के के पानी मे घोलकर पिला दो।

(५) अंडी के तेल को गर्म जल मे डालकर पिलादो।

(६) गाय के दूध मे घी मिला गर्म कर गर्म-गर्म पिलादो।

(७) छाल पीपल ऽ= अंडी की जड़ की छाल ऽ- निर्गुंडी की पत्ती १) भर भटकटैया मय जड़ के १) भर लो, पानी मे पकाकर पिलाओ।

(८) अजवाइन ॥) भर कालीमिर्च ॥) भर गुड़ ५) भर सबका चूर्ण मिलाकर खिला दो; लाभ होगा।

(९) ताजा भैंस का गोबर लो। इसे गर्म करो और पेट पर लेप करो। पुराने शूल को तुरन्त आराम हो जायगी।

(१०) जड़ अजवाइन ३॥ तो० जड़ इन्द्रायन ३॥ तो० सेंधा नमक ३॥ तो० प्याज के बीज ३॥ तो० सज्जीखार ३॥ तो० [illegible] ३ तो० अजवाइन ५ तो० हर्र ५ तो० हींग भुनी १ तो०

...नी चूर्ण २॥ तो० सबको कूट-पीसकर पुराने गुड ऽ= मे गोली बनाकर पशु को नित्य शाम-सुबह तीन दिन खिलाने से बदहजमी और शूल अच्छा हो। परीक्षित है।

(११) अनार की कली, चीट नमक, इसबगूल, धनिया, ...सौंफ ...बीसी, सब २-२ तोले लो सबको पीसकर माँड के साथ ...खिला दो।

(१२) चाय की सिठ्ठी और कटैया की जड माँड़ मे मिलाकर खिला दो।

पेशाब रुकना

किन्हीं कारणो से पेशाब का बद हो जाना बड़ा दुखदायी होता है। बड़ा कष्ट होता है। एक किस्म की बेचैनी सी हो ...ी है। मरने जीने का सवाल हो जाता है।

चिकित्सा

(१) राई को महीन पिसवाकर जल के साथ आग ...र्म करके अडकोशो पर लेप करो।

(२) गाय का दही ऽ२ लो उसी में पीसकर २। कलमी शोरा मिलाकर पिलादो।

(३) शराब और गोघृत समभाग मिलाकर रखलो उसी मे से = पिलाने से पेशाब खुलेगी।

(४) हाथ मे तेल लगाकर गोबर निकाल कर मसाने को धीरे धीरे आगे पीछे दबाओ। गर्म पानी के अमल दो।

(५) कबाब चीनी १ तो०, धनियाँ २ तो०, कलमीशोरा १ तो०, ऽ।। पानी में दो बार पिलाओ।

(६) अलसी की चाय पिलाओ।

(७) शराब देशी व गोघृत १-१ पाव मिलाकर पिलायें।

(८) कलमीशोरा १ तो०, ऽ१ दूध मे दो।

पेशाब अधिक आना

यह खराब दाना चारा व नून खराबी मे व गीली जगहों मे रखने मे होता है। पेशाब बार बार आती है। जानवर दुबला होता जाता है, कभी कभी उसमें शकर भी आती देखी जायेगी।

पेशाब पकते रहना

मसाने की कमजोरी व खून खराबी, मसाने मे खराश, बुढ़ापा व पथरी होना—

दवा

(१) पथरी को आपरेशन से निकलवा दो।

(२) दूध और अल्सी की चाय खिलाइये।

(३) कुचला ३ मा०, कबाबचीनी १ तो०, वंसलोचन ३ मा०, लुआब रेशाखतमी ꠶– सोंठ १ तो०, खुरासानी अजवाइन १ तो०, ꠶॥ पानी मे मिला दिन मे दो वार पिलाइये।

मसाने की सूजन

खराशदार जहर या घास खाना। पथरी का होना। चोट, सदमा और असें तक पेशाब का रुका रहना। पेशाव सुर्ख, दर्द, वगलों की तरफ ताकना व बुखार का होना इसकी अलामतें हैं।

दवा

(१) तेल का जुलाव दो और गर्म पानी की पिचकारी करके कमर पर सेक करो।

(२) कपूर २ मा०, बिहीदाना १ तो०, खुरासानी आजवाइन १ तो०, सोडा १ तो०, ꠶– शहद मे दिन में दो बार चटाइये।

(१) लोहजा रोग

अनायास पशु सुस्त रहता है। बाद को खून की पेशाब करने लगता है।

चिकित्सा

(१) बबूल की पत्ती ऽ। हल्दी २) तो० पानी मे घोलकर प्रात. सायं पिला दो।

(२) ककड़ के पत्ते ऽ। बकरी का दूध ऽ१ मे बाँटकर मिला कर ३ बार दो।

(२) लोहजा रोग

गर्मी के कारण जो पशु सदैव खून मूते उसका उपचार।

दवा

(१) श्वेत तिल ऽ। नित्य प्रात.रात को भीगे जल मे पीसकर सात दिन पिलाओ।

(२) अमचुर ऽ= शाम को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर प्रात उसी जल मे मल कर फुजला फेंक दो ५-७ दिन पिलाओ।

कब्ज़ा रोग

इस रोग में पेट फूल जाता है। गोबर कम और भेड़ की मेंगनी सा होता है। दस्त भी कम कम होता है। कभी-कभी तो ३-४ दिन तक पेट से पाखाना नहीं होता और अगर पेशाब

(२) हलका जुलाब देना भी हितकर होगा।

अर्धंग रोग

यह रोग वात व्याधि से होता है। एक प्रकार का लकवा ही समझिये। दोनों कान लकड़ी से सीधे हो जाते हैं। शरीर ठंडा हो जाता है। चलते नहीं बनता। बैठने उठने में कष्ट होता है।

चिकित्सा

(१) एक मिट्टी के बर्तन में काला साँप भर दो और इसी में चना ५॥ भरदो। उस बर्तन को बंद करके गोबर के घूरे में खोदकर गाड़ दो और सालभर तक गड़ा रहने दो। बाद को बर्तन खोदकर निकाल कर चने रख लो। बीमार पशुओं को १-२ चने नित्य खिलाने से समस्त वात व्याधियाँ मिटेंगी।

(२) चारों पुट्ठों पर इस प्रकार × के दो दाग दिला दें। दोनों कनपटियों और घुटनों पर एक-एक दाग दिला दें।

सीकुर रोग

यह भी वात रोग ही है। इसमें पशु सिकुड़ा रहता है। पैरों में कुछ-कुछ दरद रहता है। चलते नहीं बनता।

चिकित्सा

(१) [illegible] की छाल को पीस कर १) भर या २) भर [illegible] खिलाने से लाभ होता है।

(२) अर्धगरोग के वास्ते कहे हुये चने खिला
लाभ होता है।

हन्नवायु

इस रोग मे पशु का सारा शरीर काँपता है। पैर
धीरे उठाता है। पशु घूम-घूम कर गिर - गिर पड़ता
काल वाद पशु गिर जाता है और चारो पैर फैला
दवा यदि ठीक न हो सकी तो ४-६ घटे मे मर जाता

चिकित्सा

(१) इंद्राइन के फल २ नग ले पीस छान कर
(२) हिरन के सीग को घिस कर पिलादो।
(३) हिरन की लेड़ी पीसकर खिलाइए।
(४) खुरासानी अजवाइन २) भर वारासिगा
घिसकर १) भर मिलाये, हिरन की लेंडी पिसा ऽ-
ऽ॥ वकरी के दूध मे मिला आग मे पकाकर पिल

टनक वायु

इसमे एक पेर से लंगड़ाता है। वडी दूर तक पै
घसिटता जाया करता है। बाद को नस पसर ज
कुछ वंद हो जाता है।

चिकित्सा

(१) करयारी की जड़ २) भर नित्य ८ दिन च

(२) भुनो हींग १) भर २१ दिन चने के आटे में खिलाइए ।

(३) मुर्गी के अडे सर्पप तेल मे मिलाकर ११ दिन तक मालिश करे ।

(४) टिटिहिरी पक्षी के अडे रविवार को जौ के आँटे मे खिलादो ।

(५) दोनों कूलो पर + इस प्रकार दाग दो ।

(६) लहसुन ५) भर पीस उसी मे ६ माशा पारा मिला २१ दिन चने के आटा मे दो ।

(७) एक मिट्टी के घड़े मे तालाब की मिट्टी आधी भर दो बाद को १ करनतिया साँप मरा हुआ लो। उसकी पूँछ व सर काट डालो और उसी घड़े मे रखदो फिर ऊपर से घड़े का मुँह बद कर एक माह तक रख छोड़ो। बाद को साँप निकाल कर फेंक दो और मिट्टी छान कर रक्खो। उसी मिट्टी का ≶– बाजरा के आटे मे सानकर ५-७ दिन खिलाने से रोग मिटेगा परीक्षित है ।

बैंपल्ला बायु

इस रोग मे पशु का पिछला धड़ बेकाम हो जाता है और उठता नहीं। यह रोग अनायास हो जाता है।

चिकित्सा

(१) करनतिया साँप की साँटर ≶– पीस लो और मुर्गी के

अंडे ७ नग दोनों को चने के आटे मे मिलाकर खिला दो। बछड़े से मुर्गी के अंडे २नग सर्पप तैल ५। मे घेपकर पिला दो। बंद मकान में पशु को कम्बल से ढककर रक्खो ताकि हवा न लगे। जब पसीना आए समझ लो पशु अच्छा हो रहा है।

निर्घण्ट रोग

यह रोग जानवरो के गले के दोनो तरफ सूजन पैदा कर देता है। आँवला के मानिन्द दोनो ओर गल्टयाँ पैदा हो जाया करती है। बड़ा कष्ट पैदा हो जाता है। अगर रोग हेमंतऋतु मे हुआ तो पाखाना पेशाब बंद हो जाता है और अगर ग्रीष्म मे हुआ तो खाना पानी तक बंद हो जाता है।

(१) इन्द्राइन का गूदा, पीपर, सेधा नमक, मिर्च, अदरख सब सम भाग पीसलो उसी मे कुछ बँगला पान भी मिला लो और नित्य ११ दिन खिलाओ, रोग दूर हो।

सर्वरोग हरण

(१) खारी नमक २॥) भर नित्य पानी मे पकाकर प्रात. पिलाया करो।

(२) भुना सुहागा आटे मे मिलाकर नित्य प्रात. बारा मास खिलाया करो; कोई रोग पास न आयेगा।

(३) सफेद प्याज को बाँधकर दरवाजे पर लटका देने से भी कोई रोग जल्दी नहीं आता।

मसाला बारामासी

हर्र,	बहेरा,	आँवला,	अजवाइन,	पँवार
ऽ१	ऽ१	ऽ१	ऽ१	
केबीज,	राई,	सोंठ,	सेंधा नमक,	कचरी,
ऽ१	ऽ१	ऽ१	ऽ१	ऽ१

छाल सँहजन
ऽ१

सब दवाएँ पीसकर माटी की मटकी में भर दो और ऊपर से दही डालकर उसका मुँह बन्द कर घोड़े की लीद में ७ दिन गड़ा रहने दो। बाद को निकाल कर सुखाकर रख लो, और सब ऋतुओं में ऽ। भर नित्य प्रातः खिलाने मे कोई रोग नहीं होता और समस्त उदर व्याधियों को दूर कर स्वास्थ्य वर्धक है।

मसाला अठगोजा

सोंठ	मिर्च	पीपर,	पीपरामूर,	अजवाइन,
ऽ—	ऽ—	ऽ—	ऽ—	ऽ—
इन्द्रायन जड़,	कामीला,	नागौरी,	असगंध,	वायबिंग.
ऽ—	ऽ—	ऽ—	ऽ—	ऽ—

बीजपलाश,	पीपल जड़ की छाल,	हुरहुरा मय जड़ के,
ऽ—	ऽ—	ऽ—

अजमोद,	सोआ के पत्ते सूखे,
ऽ—	ऽ—

सबको कूट पीसकर रख लो उसी मे श्वेत तिल तेल ऽ। मलो और तीन साल का पुराना गुड़ सब दवाओं के वजन से दूना लेकर उसी मे मसल डालो और रख लो। हर मास की प्रतिपदा से अष्टमी तक नित्य प्रति ऽ— खिला दिया करो। इससे सब प्रकार की उदर व्याधियों व बादी विकार नष्ट होकर स्वास्थ्य वर्धन करता है।

चूर्ण चालीसा

आँवला,	हर्र,	बहेरा,	मैथी,	कचेलिया,
ऽ॥	ऽ॥	ऽ॥	ऽ॥	ऽ॥
सोंठ,	पीपरी,	मिर्च,	भरंगा,	अजमोद,
ऽ।	ऽ।	ऽ।	ऽ।	ऽ।
अमलतास,	तबाखीर,	मूढ,	चीत की लकड़ी,	
ऽ।	ऽ।	ऽ।	ऽ।	
सांभर नमक,	सोंधा नमक,	गूगुर,	जवाखार,	
ऽ।	ऽ।	ऽ।	ऽ।	
घुड़वच,	चूर्ण छाल सेहजन,	सौंफ,	जीरा श्वेत	
ऽ।	ऽ४	ऽ१	ऽ=	
जीरा स्याम,	हल्दी,	बीज पलाश,	आंबा हल्दी,	
ऽ=	ऽ=	ऽ=	ऽ=	
बेल का गूदा,	ककरासिंघी,	फिटकरी,	खील सुहागा,	
ऽ=	ऽ=	ऽ=	ऽ=	

असगंध,	सोवा बीज,	हुरहुरा,	पठानी लोध,
ʃ=	ʃ=	ʃ=	ʃ=
काराजीरा,	कलौंजी,	कुटकी,	मरोड़फली,
ʃ=	ʃ=	ʃ=	ʃ=

सबको कूट पीस कपड़ छानकर रख लो। नित्य प्रातः ʃ= खिलाया करो। घोड़ों को भी बारो मास खिलाने से कोई रोग दोष नहीं आते। परीक्षित है।

मसाला हाजमा

दोनो हरें, मोथा, घुडबच, वायविरंग, अजवाइन, कुटकी, हींग, सुहागा भुना, काराजीरा, सब सम भाग पीस लो। नित्य शाम सुबह ʃ? पानी में थोड़ी हींग डालकर पकाओ। जब पानी आधा रह जाय तो उसी में १) भर चूर्ण डालकर पिला दिया करो यह एक खुराक है। जब गर्मी पड़ने लगे तो सब दवाओं की १/४ सौंफ मिला दो। यह मसाला हमेशा देना चाहिये। बड़ा ही लाभप्रद है। सब प्रकार की अपच दूर करता है। परीक्षित है।

कुष्ठ राक्षस तैल

सोंठ, पाषाणभेद, पीपर; कंज का गूदा; कनेरी की जड़, चीते की लकड़ी, दरून की छाल; गंधक, मैनसिल, हरताल, कसीस; सेंधानमक; संचरनमक; भटकटैया की जड़,

की छाल, वीज पॅवार, वायबिरंग–सब घेला-घेला भर
और कूट लो। सेहुँडा का अर्क व दूध टका-टका भर
गौ का मूत्र ﾉ२, सर्पपतेल ﾉ१ लो। पहिले ऊपरी दवा
का काढ़ा करलो फिर उन्हे तेल मे पकाओ। बाद को
गौ को पकाओ जब पक जाए तो सब कल्क की दव
निकाल फेको और तेल को रखलो। यह मनुष्य अ
पशु दोनों को लाभदायक है। कई वार का परीक्षित है

महामरिचाद तैल

मिर्च, हरताल, निसोंत, वायविरंग, खारी वच, वीज पॅव
ककूँदन, गो गोबर, रस गुर्च, हल्दी, दारुहल्दी, बकुची, ल
चन्दन बुरादा, अर्क व दूध सेंहुड़ा, दतून की छाल,
इन्द्रायन, जड़ करयारी, कंज का गूदा, चीत की लकडी, क
जड़ की छाल, नागरमोथा, छाल नीम, छाल कुढ, छ
सिरस, मैनसिल, जटामासी, रोहसघास, सब टकाटक
लो और पानी मे काढ़ा करो। जब काढा आधा रहे तब
६४ टका भर सर्पप के तेल मे पकाओ। उसी मे टका
सिंघिया भी डाल दो। बाद को २५६ टका भर गो मूत्र डा
और पकाओ। बाद को उतार लो और इस्तेमाल करो। च
रोग पर अक्सीर है। परीक्षित है।

मसाला बकरी

मैथी १ भाग, मालकाकनी १ भाग, ...

नमक ८ भाग, शाजरा का आटा भूनकर मिला लो और थोड़ा-थोड़ा शाम सुबह बकरी को दिया करो—

मसाला ताकतवर

(१) जो भैंस पहिलीवार ब्याई हो उसका दूध ऽ१ लो और उसी मे घी ऽ≡ मिलाकर १२ दिन पिलाइए, अवश्य ताकत बढ़ायेगा।

(२) मिगी बादाम ऽ= मिर्च ऽ= पीपरामूर ऽ= तज ऽ= अदरक ऽ= लौंग ऽ- इलायची छोटी, जायफल, जावित्री, सोंठ सब ६-६ टंक लो और उसी मे बँगला पान ४०० मिला कर कूटकर धर लो। प्रातः सायं टका-टका भर खिलाने से ताकत बढाता है, चारा हजम करता है और शरीर मोटा करता है।

मसाला बदहज़मी व सूजन

सोंठ मिर्च, पीपर, वच, चीत, जीरा श्वेत, काला जीरी, हींग अजवायन, राई, सौंफ, कचरी, कुटकी, सज्जी, खार, सेंधा नमक, सोंचर नमक वायविरंग, जवाखार, हर्र, बहेरा, आँवला, सुहागा भुना, भुनी फिटकरी सब चीजें सम भाग लो और कूट छानकर रख लो नित्य प्रातः आधी छटांक खिलाने से लाभ हो।

मसाला दम कसी

केसर २ चावल भर पीसकर २ कहीं में भर दो फिर ऽ१

के दूध में उस छुहारे को डालकर मन्दाग्नि पर पकाओ। दूध आधा रह जाये तो उसे उतार लो और उस छुहारे को बांटकर उसी दूध मे मिलाकर १ मास तक नित्य पिलाओ, और बैलों को नित्य दौड़ाया करो। धीरे-धीरे एक एक कोस बढ़ाते जाओ। माघ मास में अगर यह प्रयोग किया जाये तो बड़ा लाभप्रद है। पशु की दमकस हो जाती है, दौड़ता बहुत है, रंगत बढ़ती है, भूख बढ़ती है, मोटा हो जाता है और शरीर मे धूप नहीं लगती। पाठक इस प्रयोग से लाभ उठायें। परीक्षित है।

दूध बढ़ाना

(१) प्रति दिन हरी-हरी घास खिलाओ।

(२) प्रसव के साथ १ मास से ही हरी-हरी घास देना आरंभ कर दो जो कि नित्य प्रति बढ़ाते जाओ—प्रसव के तीसरे दिन दलिया उर्द ऽ।। खुद्दी या चावल ऽ।। नमक ऽ हल्दी ऽ०।। चूर्ण पीपल ऽ— सबको इकट्ठा पकाओ उसमे ऽ। मिला गुनगुना गाय को खिलाओ।

(३) यदि प्रसव के पश्चात् दूध बन्द हो जाय व कठोर पड़ जायँ तो रेंडी के कुनकुने पत्तों से सेंको। उसी से ढक देने से दूध भी उतरेगा। थन का कड़ापन मिटेगा। पत्ता अधिक गर्म होने से स्तन मे फोड़ा पड़ने का भय होगा।

(४) पका केला और पानी मे मिलाया हुआ भ खिलाओ।

(५) एरंड की छीमी पानी में उबालकर वही पानी पिलाओ।

(६) ऊख की गँडेरी या खोई तीसी की खली या उबाला मटर खिलाओ।

(७) उबाली हुई बाँस की पत्तियाँ आधी छटाँक में थोड़ा गुड़ व अजवाइन मिलाकर खिलाओ।

(८) दाल का धोवन त्यागकर खेसारी की दाल में इमली मिलाकर खिलाओ।

(९) गमरी की दाल या चावल के साथ गेहूँ उबालकर खिलाओ।

(१०) गुड़ व काँजी मिलाकर खिलाओ।

(११) नाइट्रेट ऑफ पोटेशियम (Nitrate of Potassium) १ भाग, फिटकरी १ भाग, खड़िया मिट्टी १ भाग, जीरा १० भाग, चंदन सफेद २ भाग, नमक १० भाग, सौंफ १० भाग लौंग ४ भाग, सबको एकत्र कर बाँटकर रोजाना शाम सुबह खाना के साथ १–२ मुट्ठी खिलाओ।

(१२) प्रसव के कई दिन बाद दुग्धजागन नामक औषधियाँ काटकर चावल की खुद्दी के साथ उबालकर दो।

(१३) यदि दूध हठात् बन्द हो जाय तो, या कम हो जाय, और कारण अज्ञात हो तो पपीता की पत्ती और उसका कच्चा फल काटकर पीस चीनी के साथ या गुड़ और मेथी के साथ

(१४) गोभी व करम कल्ले के पत्ते, गाजर, शलजम, मूली, पपीता व पपीते के पत्ते, पलास वा सेमल के फूल पका या कच्चा उबाला बेल, घी, मैदा व गुड़ मिलाकर सन का फूल, महुआ का फूल, घास गुड़ या पानी मे उबालकर; आम का फल और शरीफा वृक्ष की छाल पकाकर, गुर्च की पत्ती तथा लता, आलू की पत्ती खिलाने से दूध बढ़े।

(१५) देशी शराब का गाद एक दिन खिलाने से दूसरे दिन ही दूध बढ़ेगा।

(१६) गुड़भेली ऽ१॥ वाली ६ पौंड पकाकर खिलाने से बहुत दिन तक दूध देती है।

(१७) गाय को उसी का दूध पिलाओ तो दूध बढ़ेगा।

खुरालरा

टोटका—मंगल इतवार को ललरहो बन्दर की खोपड़ी बाँध दे। नीलकठ का पर बाँधने से लाभ हो।

बैल फूल जाये

दवा—(१) खिरनी का रंग, कचरिया या हींग खिला दे। (२) हुक्का का बसोटा पाखाने की जगह डालकर फूँके से दस्त हो। (३) सोंठ घी मे पकाकर उँगली से गुदा मे लगा दे।

जानवर नार जाये

टोटका—तीन गंडा पैसा कपड़ा में बाँधकर मिट्टी पोतकर फिर अंडी के तेल को गर्म कर गर्दन पर सेंक दे।

मिचकरिया पर

दवा—गूँद के जड़ के बाल उखाड़कर कुनगी चौक का चीड़कर सरसों के तेल को गर्म कर जला दे, लाभ होगा।

घाव सूजने पर

टोटका—पत्थर के ७ टुकड़ा दिन के दिन गर्मकर दोनों गुलगुला पर रगड़े।

फूली पर

कॉच, घी या नेनू में महीन पीस का गारकर लगावे।

जानवर को फुलाना

कितना ही दुबला बैल क्यों न हो, खालिस तेल सरसों में फिटकरी पीसकर मिला लो और रात को जानवर के ऊपर मल दो सुबह एकदम मोटा फूल जायगा। एक दिन ऐसा करने से ४-५ दिन तक वह ऐसा ही रहेगा। व्योपारीलोग ऐसा ही किया करते हैं।

प्रसव द्वार पर घाव

(१) नारियल का तेल और लहसुन भूनकर, ठंडे होने पर से ठंडा होने पर जख्म पर लगाया करो।

पीनस

यह रोग नाक में होता है। यदि दवा जल्द न हुई तो पशु के मर जाने का अन्देशा है। इसे सोमरा रोग भी कहते हैं।

दवा

(१) सेंदुर १ तोला, केशौर का रस और घोड़े की पेशाब एक दो छटॉक, सब मिलाकर शीशी में रख लो। २-३ दिन बाद थोड़ा-थोड़ा लगा दो।

(२) वागासन के पत्तों का रस सरसों के तेल मे मिलाकर नाक मे देने से लाभ होता है।

कान की सूजन

यह मैल या चोट से होती है। जानवर कान को पैर से या खूँटे से रगड़ता और फटफटाता है।

दवा

(१) नीम के पत्ते व पोस्त का छिलका २॥ तो० ऽ२ पानी मे पकाकर कंबल के टुकड़ों से सेको। बाद को कान में भमोलन के पत्तों का रस गुनगुना कर दो रत्ती अफीम मिलाकर दो चार डालो। खुजला बद करे।

कान से मवाद आना

मैल, चोट या अन्दर के सदमे से मवाद आना। कान हिलाना, खुजलाना व नीचा रखना।

दवा

पोटाश के या नीम के पके गर्म पानी से धोकर जस्ता व काफूर गोले के तैल में मिला दिन में दो बार लगाओ।